सत्यमेव जयते

77 वीं गणतंत्र दिवस परेड

77th REPUBLIC DAY PARADE

26 जनवरी, 2026 (6 माघ, 1947)

26 January, 2026 (6 Magha, 1947)

यूरोपियन यूनियन का परेड दस्ता

यूरोपीय संघ (ईयू) का सैन्य प्रतिनिधिमंडल भारत के गणतंत्र दिवस परेड में चार झंडों के साथ भाग ले रहा है, जिसका नेतृत्व यूरोपीय संघ के सैन्य स्टाफ (ईयूएमएस) के महानिदेशक की ओर से कर्नल फ्रेडरिक साइमन स्प्रुइट द्वारा किया जा रहा है।

पहला झंडा यूरोपियन यूनियन का है। यूरोपियन झंडा यूरोपियन यूनियन का सबसे ज़्यादा पहचाना जाने वाला प्रतीक है। यह न सिर्फ़ यूनियन का, बल्कि यूरोप की साझा पहचान और एकता का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह यूरोपियन लोगों के बीच सहयोग, एकजुटता और सद्भाव का प्रतीक है। यूरोपियन झंडे में नीले बैकग्राउंड पर 12 सुनहरे तारे हैं, जो यूरोपीय देशों के बीच एकता, एकजुटता और सद्भाव का प्रतीक हैं। 1950 के दशक में डिज़ाइन किया गया यह झंडा ऐसे प्रतीकों को एक साथ लाता है जो यूरोप के मूल्यों, पहचान और एकजुटता को दर्शाते हैं। तारे घड़ी की तरह एक घेरा बनाते हैं, जो सभी ईयू के लोगों के बीच एकता, सहयोग, समानता और सद्भाव का प्रतीक है। तारों की संख्या पूर्णता और संपूर्णता का प्रतीक है। सुनहरे तारे नीले बैकग्राउंड पर बने हैं, जो पश्चिमी आसमान के रंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक साथ मिलकर, वे स्पष्टता, स्थिरता और शांति को दर्शाते हैं।

दूसरा झंडा यूरोपियन यूनियन मिलिट्री स्टाफ का है। ईयूएमएस झंडे का डिज़ाइन यूरोपियन झंडे पर आधारित है और इसमें वही नीला बैकग्राउंड और बारह सुनहरे तारे हैं। एंकर स्थिरता, सुरक्षा और समुद्री क्षमताओं को दिखाता है, पंख तेज़ी से प्रतिक्रिया, दूरदर्शिता और हवाई क्षमताओं का प्रतीक हैं। दो पार की हुई तलवारें स्टाफ के मिलिट्री स्वभाव, ताकत और अधिकार का प्रतीक हैं। ईयूएमएस की भूमिका शुरुआती चेतावनी देना, स्थिति का आकलन करना, रणनीतिक योजना बनाना, संचार और

Parade Contingent of the European Union

The European Union (EU) military representation takes part in the India Republic Day Parade with four flags led by Colonel Frederik Simon Spruijt, acting on behalf of the Director General of the European Union Military Staff (EUMS).

The first flag is that of the European Union. The European flag is the most recognisable symbol of the European Union. It represents not just the Union, but also the shared identity and unity of Europe. It stands for cooperation, solidarity and harmony among Europeans. The European flag features 12 gold stars on a blue background, symbolising unity, solidarity and harmony among European countries. Designed in the 1950s, the flag brings together symbols that reflect Europe's values, identity and cohesion. The stars form a circle, like the hours on a clock, to symbolise unity, cooperation, equality and harmony between all EU peoples. The number of stars symbolises perfection and completeness. The gold stars are set against a blue background, which represents the colour of the Western skies. Together, they reflect clarity, stability and peace.

The second flag is that of the European Union Military Staff. The design of the EUMS flag is based on that of the European flag and it has the same blue background and twelve golden stars. The anchor represents stability, security, and maritime capabilities, the wings symbolise rapid response, foresight and air capabilities. The two crossed swords symbolize the military nature, strength, and authority of the staff. The EUMS role is to provide early warning, situation assessment, strategic planning,

सूचना प्रणाली, अवधारणा विकास, प्रशिक्षण और शिक्षा, और साझेदारी को समर्थन देना है। यह हाई रिप्रेजेंटेटिव/वाइस प्रेसिडेंट (एचआरवीपी) के सीधे अधिकार में काम करता है, जो यूरोपियन एक्सटर्नल एक्शन सर्विस (ईईएएस) का नेतृत्व करती हैं और विदेश मामलों और रक्षा दोनों प्रारूपों में विदेश मामलों की परिषद की अध्यक्षता करती हैं। ईयूएमएस, ईयू की राजनयिक सेवा के रूप में अपनी भूमिका में ईईएएस का सैन्य घटक बनने के लिए प्रतिबद्ध है।

तीसरा झंडा ईयू नेवल फोर्स (ईयूएनएवीएफओआर) अटलांटा का है। इसमें नीले बैकग्राउंड और सुनहरे तारे हैं, साथ ही एक जहाज़ भी है जो यह दिखाता है कि यह एक नौसैनिक ऑपरेशन है। ईयूएनएवीएफओआर अटलांटा ईयू की कॉमन सिक्योरिटी एंड डिफेंस पॉलिसी और इंडो-पैसिफिक के लिए ईयू की नेवल डिप्लोमेसी में अहम भूमिका निभाता है। 2008 से यह तटीय देशों को शांति, स्थिरता और समुद्री सुरक्षा के लिए मिलकर काम करने में मदद कर रहा है, जिसमें (अन्य बातों के अलावा) वर्ल्ड फूड प्रोग्राम (डब्लूएफपी) के जहाज़ों की सुरक्षा करना, समुद्र में समुद्री डाकू और हथियारों से होने वाली लूट से लड़ना और गैर-कानूनी समुद्री गतिविधियों को रोकना शामिल है।

चौथा झंडा ईयूएनएवीएफओआर एस्पाइड्स का है, जो ईयू का सबसे नया नौसैनिक ऑपरेशन है। “एस्पाइड्स” नाम ग्रीक शब्द “ढाल” से लिया गया है। नाम का यह चुनाव सीधे तौर पर ऑपरेशन के पूरी तरह से रक्षात्मक मकसद को दिखाता है और यह झंडे में भी दिखता है। 2024 की शुरुआत से, ईयूएनएवीएफओआर एस्पाइड्स नेविगेशन की आज़ादी की सुरक्षा और समुद्री सुरक्षा को बनाए रखने में योगदान दे रहा है, खासकर लाल सागर, हिंद महासागर और अदन की खाड़ी में व्यापारिक और वाणिज्यिक जहाज़ों के लिए।

Communications and Information Systems, concept development, training and education, and support of partnerships. It works under the direct authority of the High Representative/Vice President (HRVP), who leads the European External Action Service (EEAS) and chairs the Foreign Affairs Council in both its Foreign Affairs and Defence formats. EUMS is committed to be the military component of EEAS in its role as the EU's diplomatic service.

The third flag is that of the EU Naval Force (EUNAVFOR) ATALANTA. It shows a blue background and golden stars as well, together with a ship symbolizing it is a naval operation. EUNAVFOR ATALANTA plays a vital role in the EU's Common Security and Defence Policy and EU's Naval Diplomacy for the Indo-Pacific. Since 2008 it has supported the Coastal States in a combined effort for peace, stability and Maritime security, by (inter alia) protection of World Food Program (WFP) vessels, fighting piracy and armed robbery at sea and disrupting and deterring illicit maritime flows.

The fourth flag is of EUNAVFOR ASPIDES, the EU's youngest naval operation. The name “Aspides” is the Greek word for “shields”. This choice of name directly reflects the operation's purely defensive mandate and is expressed in the flag. Since early 2024, EUNAVFOR ASPIDES is contributing to the protection of freedom of navigation and to safeguarding maritime security, especially for merchant and commercial vessels in the Red Sea, the Indian Ocean and the Gulf of Aden.

कार्यक्रम

1027 बजे राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथि, यूरोपीय परिषद् और यूरोपीय आयोग के अध्यक्षों का राजकीय सम्मान के साथ राजकीय बग्घी में आगमन।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथियों की अगवानी।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथियों से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, चीफ आफ डिफेंस स्टाफ, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय ।

राष्ट्रपति, मुख्य अतिथि तथा प्रधान मंत्री का मंच की ओर प्रस्थान।

राष्ट्र धवज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोंपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।

सांस्कृतिक झाँकी।

मोटर साइकिल करतब।

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति एवं मुख्य अतिथियों का राजकीय सम्मान के साथ राजकीय बग्घी में प्रस्थान।

PROGRAMME

1027 hrs The President and the Chief Guests, the Presidents of the European Council and European Commission arrive in state coach.

The Prime Minister receives the President and the Chief Guests.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guests, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, Chief of Defence Staff, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President, the Chief Guests and the Prime Minister proceed to the rostrum.

The National Flag is unfurled and the President 's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motor Cycle Display.

Flypast.

National Salute.

The President and the Chief Guests depart in state coach.

परेड क्रम

वाद्ययंत्रों के साथ उद्घोषणा

हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड सेकंड-इन-कमांड

परमवीर चक्र और अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

चार ध्वज वाहकों का यूरोपीय संघ दल

सेना

रेकी एलिमेंट्स

61 कैवेलरी

एचएमआरवी (हाई मोबिलिटी रेकी व्हीकल – बीएफएसआर और एटीजीएम) और ऑपरेशन सिंदूर फ्लैग के साथ ध्रुव हेलीकॉप्टर

शेपिंग द बैटल फील्ड

रुद्र हेलीकॉप्टर

कॉम्बैट एलिमेंट

अपाचे और प्रचण्ड

टी-90 और एमबीटी अर्जुन

बीएमपी-II और नाग मिसाइल सिस्टम (नामीस)-II

ऑल-टेरेन व्हीकल (एटीवी)

लाइट स्ट्राइक व्हीकल्स विद ट्रेलर

व्हीकल माउंटेड इन्फेंट्री मोर्टार सिस्टम और लाइट स्ट्राइक व्हीकल माउंटेड स्पाइक मिसाइल सिस्टम

04 x मानव रहित व्हीकल्स, वाहन के ऊपर

कॉम्बैट सपोर्ट एलिमेंट

शक्तिबाण और दिव्यास्त्र

एडवांस्ड टोड अर्टिलरी गन सिस्टम और धनुष

यूनिफाइड राकेट लांचर सिस्टम्स और ब्रह्मोस

आकाश और मध्यम रेंज सरफेस टू एयर मिसाइल्स

लोजिस्टिक्स एंड मिसलेनियस

ड्रोन शक्ति : ईगल प्रहार

एकीकृत परिचालन केंद्र

THE ORDER OF MARCH

Heralding with Musical Instruments

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

European Union Contingent of four Flag Bearers

ARMY

Recce Elements

61 Cavalry

HMRV (High Mobility Recce Vehicle – BFSR & ATGM) and Dhruv Helicopters with Op Sindoor Flag

Shaping The Battle Field

Rudra Helicopters

Combat Element

Apache and Prachand

T-90 & MBT Arjun

BMP-II and Nag Missile System (NAMIS)-II

All-Terrain Vehicle (ATV)

Light Strike Vehicles with Trailer

Vehicle mounted Infantry Mortar System & Light Strike Vehicle mounted SPIKE Missile System

04 x Unmanned Ground Vehicles mounted on Vehicles

Combat Support Element

Shaktiban & Divyastra

Advanced Towed Artillary Gun System and Dhanush

Unified Rocket Launcher Systems and Brahmos

Akash and Medium Range Surface to Air Missiles

Logistics and Miscellaneous

Drone Shakti : Eagle on Arm

Integrated Operational Centre

पशु टुकड़ी	**Animal Contingent**
बक्टेरियन ऊंट	Bacterian Camel
ज़ांस्कर पोनी	Zansker Pony
रैप्टर्स	Raptors
ग्लेशियर ऑल -टेर्रिन व्हीकल, वाहन के ऊपर	Glacier All-Terrain, Vehicle mounted on Vehicle
डॉग्स	Dogs

मार्च करती हुई टुकड़ी और बैंड / Marching Contingents and Bands

मिक्स्ड स्काउट्स सैन्य टुकड़ी	Mixed Scouts Contingent
पारा रेजिमेंट ब्रिगेड ऑफ़ गाड्र्स रेजिमेंट - बैंड राजपूत राइफल रेजिमेंट	PARA Regiment Brigade of Guards Regiment - Band RAJPUT Rifle Regiment
राजपूत सैन्य टुकड़ी	RAJPUT Contingent
असम सैन्य टुकड़ी	ASSAM Contingent
कुमाऊँ रेजिमेंट 39 गोरखा ट्रेनिंग सेंटर - बैंड 11 गोरखा राइफल रेजिमेंटल सेंटर	KUMAON Regiment 39 Gorkha Training Centre - Band 11 Gorkha Rifle Regimental Centre
जेक एलआई सैन्य टुकड़ी	JAK LI Contingent
आर्टि सैन्य टुकड़ी	ARTY Contingent
बीइजी, किरकी एएससी साउथ - बैंड एएमसी सेंटर और स्कूल	BEG, Kirkee ASC South - Band AMC Centre & School
भैरव सैन्य टुकड़ी (दौड़ के ऊँचा कदम ताल)	BHAIRAV Contingent (Daud ke Uncha Kadam Taal)

नौसेना / NAVY

नौसेना ब्रास बैंड	Navy Brass Band
नौसेना की मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ी	Navy Marching Contingent
नौसेना की झांकी	Navy Tableau

वायु सेना / AIR FORCE

वायु सेना बैंड	Air Force Band
वायु सेना की मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ी	Air Force Marching Contingent
वेटरन्स झाँकी (वायु सेना द्वारा)	**Veterans Tableau** (by Air Force)

डीएमए की झांकी
बैंड: भारतीय तटरक्षक बल
भारतीय तटरक्षक बल की मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ी

DMA Tableau
Band: Indian Coast Guard
Indian Coast Guard Marching Contingent

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

उपकरण – लॉन्ग रेंज एंटी -शिप मिसाइल

DEFENCE RESEARCH AND DEVELOPMENT ORGANISATION

Equipment – Long Range Anti-Ship Missile.

सीएपीएफ और अन्य सहायक बल

बैंड: सीआईएसएफ
सीआईएसएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: सीआरपीएफ
सीआरपीएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: आईटीबीपी
आईटीबीपी की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड: दिल्ली पुलिस
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

बीएसएफ की ऊंटों की टुकड़ी
बैंड: बीएसएफ ऊंट

CAPFs AND OTHER AUXILIARY FORCES

Band: CISF
CISF Marching Contingent

Band: CRPF
CRPF Marching Contingent

Band: ITBP
ITBP Marching Contingent

Band: Delhi Police
Delhi Police Marching Contingent

BSF Camel Contingent
Band: BSF Camel

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

लड़कियों की मार्च करती हुई टुकड़ी
एनसीसी के संयुक्त बैंड
लड़कों की मार्च करती हुई टुकड़ी

NATIONAL CADET CORPS (NCC)

Girls' Marching Contingent
NCC's Combined bands
Boys' Marching Contingent

My भारत

My भारत की मार्च करती हुई टुकड़ी

My Bharat

My Bharat Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकियाँ - 27 (सत्ताईस)

THE CULTURAL PAGEANT

Tableaux - 27 (Twenty Seven)

सांस्कृतिक प्रदर्शन

संस्कृति मंत्रालय द्वारा संगीत नाटक अकादमी (एसएनए) और राष्ट्रिय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) से चुने गए 2500 कलाकारों के समूह द्वारा आरडीसी-2026 के मौके पर कर्तव्य पथ पर सांस्कृतिक प्रदर्शन किये जायंगे। प्रदर्शन का विषय "स्वतंत्रता का मंत्र – वंदे मातरम" है।

मोटर साइकिल करतब : सीआरपीएफ (महिला टीम) और एसएसबी (पुरुष और महिला की संयुक्त टीम)।

भारतीय वायुसेना द्वारा फ्लाई-पास्ट

[मौसम अनुकूल रहने पर]

ध्वज फॉर्मेशन: 4 x एमआई-17 IV से युक्त फॉर्मेशन, राष्ट्रीय ध्वज और संबंधित सेवा ध्वज लेकर "कटार" फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे।

प्रहार फॉर्मेशन: इस फॉर्मेशन में 1 x एएलएच (ऑपरेशन सिंदूर फ्लैग) + 1 x एएलएच डब्लूएस आई + 1 x एएलएच एमके IV शामिल होंगे और ये 'विक' फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे।

गरुड़ फॉर्मेशन: इस फॉर्मेशन में 1 x अपाचे + 1 x एलसीएच एयरक्राफ्ट 'लाइन एस्टर्न' फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे।

सिंदूर फॉर्मेशन: सिंदूर फॉर्मेशन में 2 x राफेल + 2 x मिग-29 + 2 x एसयु-30 + 1 x जगुआर 'स्पीयरहेड' फॉर्मेशन शामिल हैं।

अर्जन फॉर्मेशन: एक सी-130 विमान और दो सी-295 विमान 'विक' फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे।

वरुण फॉर्मेशन: वरुण फॉर्मेशन जिसमें 1 x पी8आई + 02 x एसयु-30 शामिल होंगे, 'विक' फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे।

वज्रांग फॉर्मेशन: 06 x राफेल विमान 'वज्रांग' फॉर्मेशन में उड़ान भरेंगे।

विजय फॉर्मेशन: 1 राफेल वाला फॉर्मेशन 'वर्टिकल चार्ली' फॉर्मेशन में उड़ेगा।

बैनर के साथ गुब्बारे छोड़े जाएंगे: भारतीय मौसम विभाग

CULTURAL PERFORMANCES

Cultural performances would be made by group of 2500 artists selected by Ministry of Culture from the Sangeet Natak Akademi (SNA) and the National School of Drama (NSD) will perform on Kartvyapath on the occasion of RDC-2026. The theme of performance is "स्वतंत्रता का मंत्र – वंदे मातरम".

Motor Cycle Display: CRPF (Female team) and SSB (combined team of Male & Female).

FLY-PAST by IAF

[If weather conditions permit]

Dhwaj Formation: The formation comprising 4 x Mi-17 IV are to fly in "Kataar" formation, carrying the national ensign and respective service ensigns.

Prahar Formation: The formation comprising 1 x ALH (Op Sindoor Flag) + 1 x ALH WSI + 1 x ALH Mk IV will fly-past in 'Vic' formation.

Garud Formation: The formation comprising of 1 x Apache + 1 x LCH aircraft will fly-past in 'Line Astern' formation.

Sindoor Formation: Sindoor formation, comprising of 2 x Rafale + 2 x MiG-29 + 2 x Su-30 + 1 x Jaguar 'Spearhead' formation.

Arjan Formation: The formation comprising 1 x C-130 + 2 x C-295 in echelon would fly in 'Vic' Formation.

Varuna Formation: Varuna formation comprising of 1 x P8i + 02 x Su-30 would fly in 'Vic' formation.

Vajraang Formation: The formation comprising 6 x Rafale would fly in 'Arrowhead' Formation.

Vijay Formation: The formation comprising 1 x Rafale would fly in 'Vertical Charlie' Formation.

Release of balloons with banners: India Meteorological Department

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत का प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग-बिरंगी झाँकियों में भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी पहलुओं का चित्रण है। इन झाँकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु-शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating its 77th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress, symbolising India's glorious past and reflects the citizens aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.

आशारिकांडी -
असम का टेराकोटा शिल्प गांव

असम की झांकी आत्मनिर्भर भारत की थीम पर आधारित है और यह असम के धुबरी ज़िले में स्थित प्रसिद्ध आशारिकांडी गाँव को प्रदर्शित करती है - जो पारंपरिक असमिया टेराकोटा शिल्पकारों का भारत का सबसे बड़ा केंद्र है। एक सदी से भी अधिक समय से इस गाँव के परिवार मिट्टी की कला को संजोए हुए हैं, जो सादगी, सौंदर्य और गहरी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।

झांकी के अग्र भाग में एक भव्य टेराकोटा गुड़िया है, जिसके हाथों में वृत्ताकार रूप से सजे मिट्टी के दीपक हैं, जो दर्शकों के लिए एक आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। ट्रैक्टर भाग को बाँस की बाड़ से कलात्मक रूप से सजाया गया है, जो असम के प्रचुर बाँस संसाधनों और राज्य के आर्थिक विकास में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है।

झांकी का पिछला भाग एक सुंदर मयूरपंखी नाव के रूप में तैयार किया गया है, जिसमें कारीगरों को हिरामाटी (मिट्टी) से देवी–देवताओं की दिव्य मूर्तियाँ गढ़ते हुए दिखाया गया है। नाव के पीछे की ओर लगा पारंपरिक पाल (कैनवास पाल) असम की समृद्ध नदी-परंपरा और सांस्कृतिक विरासत को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है।

झांकी के साथ पारंपरिक मेखेला-चादोर पहने महिला कारीगरों का एक समूह भी है, जो लयबद्ध तरीके से चलते हुए गा रहा है।

-असम

Asharikandi -
Terracotta Craft Village of Assam

The Assam Tableau, based on the theme Atmanirbhar Bharat, showcases the renowned village of Asharikandi in the Dhubri district of Assam - India's largest cluster of traditional Assamese terracotta artisans. For over a century, the families of this village have preserved and perfected the age-old art of clay craftsmanship, embodying simplicity, aesthetic beauty, and deep cultural significance.

At the front of the tableau stands a magnificent terracotta doll holding earthen lamps arranged in a circular formation, creating a visually striking focal point. The tractor section is artistically designed with bamboo fencing, symbolizing Assam's abundant bamboo resources and their vital contribution to the state's economic development.

The rear part of tableau takes the form of a graceful Moyurponkhi boat, where artisans are depicted shaping Hiramati (clay) into divine forms of gods and goddesses. At the rear end, a traditional Pall (sail canvas) enhances the authentic aesthetic of the boat, reflecting Assam's rich riverine heritage.

Accompanying the tableau is a group of female artisans in traditional Mekhela–Chador, moving rhythmically while singing.

- ASSAM

स्वतंत्रता का मंत्र: वंदे मातरम्

राष्ट्रगान "वंदे मातरम् " की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर गुजरात की झांकी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय ध्वज के विकसित होते स्वरूप की यात्रा को प्रस्तुत करती है। यह झांकी नवसारी, गुजरात में जन्मी क्रांतिकारी मैडम भीकाजी कामा को श्रद्धांजलि अर्पित करती है, जिन्होंने अपने साथियों के साथ विदेशी धरती से भारत की स्वतंत्रता की ज्योत प्रज्वलित की।

झांकी के अग्रभाग में मैडम भीकाजी कामा की प्रतिमा है, जिनके हाथ में उनके द्वारा अभिकल्पित भारत का सर्व प्रथम "वंदे मातरम्"अंकित ध्वज है। उन्होंने इसे पहली बार 1907 में पेरिस में फहराया, जिसे बाद में जर्मनी के स्टटगार्ट में आयोजित इंडियन सोशलिस्ट कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत किया गया। उनकी प्रतिमा के नीचे वंदे मातरम् को भारत की विभिन्न भाषाओं में उत्कीर्ण गया है।

झांकी का मध्य भाग भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाता है। इसकी शुरुआत 1906 में कोलकाता के पारसी बागान से होती है, जहाँ क्रांतिकारियों ने विदेशी वस्तुएँ जलाईं, स्वदेशी आंदोलन को अपनाया और एक ध्वज फहराया। 1907 में मैडम भीखाजी कामा ने पेरिस में अपना ध्वज फहराया। 1917 में होम रुल आंदोलन के दौरान एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक ने नया ध्वज प्रस्तुत किया। 1921 में पिंगली वेंकैया ने चरखे और तीन रंगों वाला ध्वज डिजाइन कर महात्मा गांधी को सौंपा। 1931 में इसे औपचारिक रुप से स्वीकार किया गया और 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने धर्म चक्र युक्त तिरंगे को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया।

झांकी के अंतिम भाग में महात्मा गांधी की प्रतिमा है, जो स्वदेशी और चरखे के माध्यम से स्वतंत्रता के उनके संदेश का प्रतीक है, तथा इसके साथ धर्म चक्र भी दर्शाया गया है। झांकी के चारों ओर स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण क्षणों की स्मृतियाँ प्रदर्शित हैं।

- गुजरात

Mantra of Freedom: Vande Mataram

On the occasion of the 150th anniversary of the national song Vande Mataram, Gujarat's tableau presents the evolving journey of the Indian National Flag. It also pays homage to Madam Bhikaji Cama, born in Navsari, Gujarat, who, along with her revolutionary compatriots, ignited the flame of revolution from foreign soil.

At the front of the tableau stands Madam Bhikaji Cama, holding the self-designed flag bearing the inscription Vande Mataram. She first unfurled this flag in Paris in 1907, and it was later presented at the Indian Socialist Conference in Stuttgart, Germany. Beneath her semi-statue, Vande Mataram is inscribed in multiple Indian languages.

The middle section depicts the journey of the Indian National Flag. It begins in 1906 at Kolkata's Parsi Bagan, where revolutionaries burned foreign goods, embraced Swadeshi, and unfurled a flag. In 1907, Madam Bhikaji Cama unfurled her flag in Paris. In 1917, Annie Besant and Bal Gangadhar Tilak introduced a new flag during the Home Rule Movement. In 1921, Pingali Venkayya designed a new flag with the charkha and three colours in Vijayawada and presented it to Mahatma Gandhi. In 1931, a formal resolution adopted Venkayya's design with minor modifications. On 22 July 1947, the Constituent Assembly adopted the tricolour with the Dharma Chakra at its centre, giving India its present National Flag.

The tableau concludes with a sculpture of Mahatma Gandhi, symbolising his call for freedom through Swadeshi and the Charkha, depicted alongside the Dharma Chakra. Surrounding the tableau are relics that recall key moments of India's freedom struggle.

- GUJARAT

समृद्धि का मंत्र: आत्मनिर्भर भारत – ईवी निर्माण केंद्र

तमिलनाडु की झांकी "समृद्धि का मंत्र: आत्मनिर्भर भारत" की थीम पर आधारित है, जिसमें परंपरा और तकनीक का शानदार सामंजस्य दर्शाया गया है। यह झांकी तमिलनाडु को भारत में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) निर्माता के रुप में सबसे बड़े हब के रूप में उभरता हुआ दर्शाती है।

झांकी का सामने वाला हिस्सा टेक्नो-जल्लीकट्टू को दर्शाता है, जो राज्य की सांस्कृतिक विरासत और अदम्य साहस का प्रतीक है। जल्लीकट्टू की मुद्रा में दिखाया गया व्यक्ति हिम्मत, कौशल और पीढ़ियों से चली आ रही विरासत को दर्शाता है। चमकते हुए सर्किट जैसे पैटर्न से बनाया गया बैल परंपरा और भविष्य की तकनीक के मिश्रण को दर्शाता है। इस भाग में "नयापन यहीं से शुरू होता है" संदेश पर ज़ोर दिया गया है, जिसे डिजिटल रूप से हरे बैकग्राउंड में दर्शाया गया है।

झांकी का मध्य भाग निरंतर गतिशीलता और आधुनिक इलेक्ट्रोनिक उत्पादन क्षमताओं को दर्शाता है। एक निर्माणाधीन इलेक्ट्रिक कार में दिखायी गयी बैटरी और मोटर पारदर्शिता और नयेपन का प्रतीक हैं। बैटरी यूनिट्स को तैयार करते स्वचालित रोबोट सटीकता और औद्योगिक उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन टिकाऊ और निर्बाध गतिशीलता के प्रति तमिलनाडु की प्रतिबद्धता को दृढ़ बनाता है।

झांकी का पिछले भाग में जीवन वृक्ष को दर्शाया गया है, जिसके प्राकृतिक और सर्किटनुमा बँटे हुए हिस्से पारिस्थितिकी और उद्योग के बीच संतुलन का प्रतीक हैं। यांत्रिक रूपांकन और डिजिटल डिजाइन पर्यावरण-प्रौद्योगिकी की अवधारणा को सुदृढ़ करते हैं।

यह झांकी तमिलनाडु को एक ऐसे राज्य के रूप में दर्शाती है जो संस्कृति से जुड़ा है, नएपन से प्रेरित है और सतत एवं आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रतिबद्ध है।

- तमिलनाडु

Mantra of Prosperity: Self-Reliant India – EV Manufacturing Hub

The Tamil Nadu tableau embodies the theme "Mantra of Prosperity: Self-Reliant India" by presenting a harmonious blend of tradition and technology. It showcases Tamil Nadu's transformation into India's leading hubs for Electric Vehicle (EV) manufacturing.

The front of the tableau segment depicts Techno-Jallikattu, symbolising the State's cultural strength and indomitable spirit. A man engaged in a Jallikattu pose represents courage, skill and heritage passed through generations. The bull, rendered with glowing circuit-like patterns, reflects the fusion of tradition with futuristic technology. This segment conveys the message "Innovation Begins Here" against a digital green backdrop.

The middle section of the tableau highlights clean mobility and advanced EV manufacturing capabilities. A partially assembled electric car reveals its battery and motor, symbolising transparency and innovation. Robotic arms assembling battery units portray automation, precision with industrial excellence. An EV charging station reinforces Tamil Nadu's commitment to sustainable and green mobility.

The rear section of the tableau features the Tree of Life, with natural and circuit-patterned halves, symbolising balance between ecology and industry. Mechanical motifs and digital designs reinforce the eco-technology narrative.

The tableau presents Tamil Nadu as culturally rooted, technologically driven, and committed to a self-reliant, sustainable India.

- TAMILNADU

आयुष का तंत्र, स्वास्थ्य का मंत्र

आयुष मंत्रालय की झांकी भारत की पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को सुदृढ़ करने और उन्हें राष्ट्रीय जन-स्वास्थ्य ढांचे से जोड़ने में 'राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम)' की भूमिका को प्रदर्शित करती है। इस झांकी की अवधारणा वंदे मातरम् और आत्मनिर्भर भारत के आदर्शों से प्रेरित है।

झांकी के अग्र भाग में आचार्य चरक, ऋषि पतंजलि और महर्षि अगस्त्य की औषधीय पौधों की पहाड़ी पर विराजमान घूमती हुई त्रि-मूर्ति स्थापित है, जो भारत की समृद्ध आयुष विरासत का प्रतीक है। इसके साथ चलती टुकड़ी आयुष और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के एकीकरण को दर्शाती है।

मुख्य ट्रेलर में एनएएम की तीन प्रमुख पहलें – 'सुप्रजा', 'वयोमित्र' और 'आयुर्विद्या' प्रस्तुत की गई हैं, जो क्रमशः महिला एवं बाल स्वास्थ्य, वृद्ध देखभाल तथा विद्यालयी बच्चों के लिए आयुष शिक्षा पर केंद्रित हैं। भारतीय दर्शन के छह आंतरिक शत्रु - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य को भावपूर्ण कठपुतलियों के माध्यम से दर्शाया गया है, जो यह स्पष्ट करता है कि आयुष पद्धतियाँ मानसिक विकारों पर विजय पाने और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने में सहायक हैं।

पिछले भाग में आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) को सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। इसके ऊपर प्रकाशित चक्रों वाली ध्यानमग्न आकृति तथा योग मुद्राओं में स्थित आकृतियाँ शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का प्रतीक हैं। झांकी के पार्श्व पैनलों पर मर्म, शिरोधारा और कपिंग जैसी चिकित्सा पद्धतियों के त्रि-आयामी भित्ति चित्र प्रदर्शित हैं तथा विभिन्न आयुष प्रणालियों के संस्थापकों को सम्मानित किया गया है। झांकी का समापन एनएएम के अंतर्गत स्थापित एक आयुष शैक्षणिक संस्थान के प्रदर्शन के साथ होता है।

- आयुष मंत्रालय

Ayush Ka Tantra, Swasthya Ka Mantra

The tableau of Ministry of Ayush showcases the role of the 'National Ayush Mission (NAM)' in strengthening India's traditional systems of medicine and integrating them into the national public health framework. The concept draws inspiration from the ideals of Vande Mataram and Aatmanirbhar Bharat.

The front unit of tableau features a rotating tri-sculpture of Acharya Charak, Rishi Patanjali, and Maharshi Agastya seated on a hill of medicinal plants, symbolising India's rich Ayush heritage. A walking contingent alongside highlights the integration of Ayush & Artificial Intelligence.

The main trailer presents three flagship initiatives of NAM – 'Supraja', 'Vayomitra', and 'Ayurvidya' focusing on women and child healthcare, elderly care, and Ayush education for school children. The six inner enemies of Indian philosophy Kama, Krodha, Lobha, Moha, Mada, and Matsarya are depicted through expressive puppets, illustrating how Ayush practices help overcome mental afflictions and promote holistic well-being.

The rear section features an Ayushman Arogya Mandir (Ayush) representing community-level healthcare. Above it, a meditative figure with illuminated chakras and surrounding yoga postures symbolises harmony of body, mind, and spirit. The side panels display three-dimensional murals of therapies such as Marma, Shirodhara, and Cupping, along with tributes to the founders of various Ayush systems. The tableau concludes with an Ayush educational institution established under NAM.

- MINISTRY OF AYUSH

कौशल के माध्यम से आत्मनिर्भर और भविष्य के लिए तैयार भारत का निर्माण

कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय की झांकी भारत के भविष्य के लिए तैयार कार्यबल का केंद्र बनने की दिशा में बदलाव को दिखाती है, जो नवाचार, उत्पादकता और सतत विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ सबको साथ लेकर चलने की भावना को भी बढ़ावा देती है।

भारत के कार्यबल की भविष्य की तैयारी पीएम-सेतु (प्रधानमंत्री - उन्नत आईटीआई के माध्यम से कौशल विकास और रोजगार क्षमता में परिवर्तन) जैसी योजनाओं से हो रही है और आत्मनिर्भरता की ओर इसकी यात्रा को उन योजनाओं/कार्यक्रमों से ताकत मिल रही है जो पारंपरिक और उभरते हुए कौशल पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

झांकी की बनावट समावेशिता, भविष्य की तैयारी और आत्मनिर्भरता - इन तीन मुख्य पहलुओं को दर्शाती है। समावेशिता को दो महिलाओं की स्थापना के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है, जो गैर-पारंपरिक एवं भविष्य के लिए तैयार कौशलों में महिलाओं की भागीदारी को दिखाता है। भविष्य की तैयारी को ट्रेलर में नवीकरणीय ऊर्जा, उन्नत विनिर्माण, ऑटोमोटिव (ईवी) और एआई जैसे चार क्षेत्रों में भविष्य की चार उच्च-मांग वाले व्यवसायों के समावेश से दर्शाया गया है। आत्मनिर्भरता को मिट्टी के बर्तन और हथकरघा जैसे दो पारंपरिक व्यवसायों में संलग्न कारीगरों के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

झांकी की बनावट में एक मानव मस्तिष्क स्थापना भी शामिल है जो रचनात्मक और विश्लेषणात्मक/तकनीकी कौशल को दिखाता है। जिन दो हाथों पर मस्तिष्क स्थापना रखा है, वे सरकार और उद्योग के बीच सहयोग को दिखाते हैं, जो मांग आधारित कौशल विकास पारिस्थितिकी तंत्र सुनिश्चित करता है, जबकि ट्रैक्टर के किनारे की भित्तिचित्र भविष्य और पारंपरिक कौशल में निहित क्षेत्रों और व्यवसायों को दर्शाते हैं।

- कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय

India's Path to Self-Reliance and Future Readiness Powered by Skills

The tableau of Ministry of Skill Development and Entrepreneurship represents India's transformation towards becoming a hub of future-ready workforce capable of driving innovation, productivity, and sustainable growth while nurturing inclusivity.

The future readiness of India's workforce is being driven by schemes such as PM-SETU (Pradhan Mantri - Skilling and Employability Transformation through Upgraded ITIs) and its journey towards self-reliance is empowered by schemes/programmes that focus on traditional and emerging skills.

The tableau design captures three key aspects - inclusivity, future readiness, and self-reliance. Inclusivity is depicted through an installation of two women, highlighting women's participation in non-traditional and future-ready skills. Future readiness is reflected in the trailer through the incorporation of four high-demand trades of the future across four sectors, namely Renewable, Advanced Manufacturing, Automotive (EV) and AI. Self-reliance is showcased by artisans engaged in two traditional trades - Pottery and Handloom.

The tableau design also integrates a human brain installation showcasing Creative and Analytical/Technical skills. The two hands on which the brain installation sits represent collaboration between the Government and the Industry that ensures a demand driven skill development ecosystem, while the murals on the side of the tractor showcase sectors and trades in future and traditional skills.

- MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT AND ENTREPRENEURSHIP

जनजातीय वीर नायकों को समर्पित भारत का पहला डिजिटल संग्रहालय

छत्तीसगढ़ की झांकी जनजातीय समाज के उन अमर वीर नायकों को नमन है, जिन्होंने अंग्रेजी शासन के अन्यायपूर्ण कानूनों का साहसपूर्वक विरोध करते हुए स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इन महान बलिदानियों की स्मृति में देश का पहला जनजातीय डिजिटल संग्रहालय नवा रायपुर अटल नगर में स्थापित किया गया है, जिसमें 14 प्रमुख जनजातीय स्वतंत्रता संग्रामों को आधुनिक डिजिटल माध्यमों से संजोया गया है। इस संग्रहालय का लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना की रजत जयंती के अवसर पर किया गया।

झांकी के अग्रभाग में सन् 1910 के ऐतिहासिक भूमकाल विद्रोह के नायक वीर गुंडाधुर को दर्शाया गया है। धुरवा समाज के वीर गुंडाधुर ने अन्याय के विरुद्ध समाज को एकजुट किया। आम की टहनी और सूखी मिर्च, जो भूमकाल विद्रोह के प्रतीक थे, झांकी में विशेष रूप से प्रदर्शित हैं। विद्रोह की व्यापकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अंग्रेजों को नागपुर से सेना बुलानी पड़ी, फिर भी वे वीर गुंडाधुर को पकड़ नहीं सके।

झांकी के पिछले भाग में छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह को घोड़े पर तलवार लिए दर्शाया गया है। उन्होंने अकाल के समय गरीबों के हित में संघर्ष किया और 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह झांकी जनजातीय समाज की अदम्य वीरता, देशभक्ति और स्वतंत्रता के प्रति अटूट संकल्प को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करती है।

- छत्तीसगढ़

India's First Digital Museum Dedicated to Tribal Heroic Leaders

The tableau of Chhattisgarh pays tribute to the immortal tribal heroes who courageously opposed the unjust laws of British rule and sacrificed their lives for the cause of independence. In memory of these great martyrs, the country's first Tribal Digital Museum has been established in Nava Raipur Atal Nagar, where 14 major tribal freedom struggles have been preserved using modern digital technologies. The museum was inaugurated by Prime Minister Shri Narendra Modi on the occasion of the Silver Jubilee of the formation of the state of Chhattisgarh.

At the forefront of the tableau is depicted Veer Gundadhur, the hero of the historic Bhumkal Rebellion of 1910. Veer Gundadhur of the Dhurwa community united society against injustice. Mango twigs and dried chillies, which were symbols of the Bhumkal Rebellion, are prominently displayed in the tableau. The scale of the rebellion can be understood from the fact that the British had to summon troops from Nagpur, yet they were unable to capture Veer Gundadhur.

The rear of the tableau depicts Veer Narayan Singh, the first martyr of Chhattisgarh, on horseback with a sword in hand. He fought for the welfare of the poor during a famine and played a significant role in the First War of Indian Independence in 1857.

- CHHATTISGARH

जन केन्द्रित न्याय प्रणाली

गृह मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत यह झांकी तीन परिवर्तनकारी कानूनों - भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए), 2023 - के ऐतिहासिक अधिनियमन एवं क्रियान्वयन को दर्शाती है, जो 1 जुलाई 2024 को "दण्ड से न्याय की ओर" सिद्धांत द्वारा निर्देशित होकर लागू हुए। ये कानून औपनिवेशिक काल के आईपीसी, सीआरपीसी तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम का स्थान लेते हुए आधुनिक, नागरिक-केंद्रित न्याय प्रणाली की दिशा में एक निर्णायक परिवर्तन को रेखांकित करते हैं।

झांकी के अग्र भाग में नए संसद भवन के शीर्ष पर स्थापित तीनों नए कानूनों की पुस्तकों को दर्शाया गया है, जिनके पृष्ठभूमि में भारत का संविधान है, जो संवैधानिक प्रतिबद्धता और लोकतांत्रिक वैधता का प्रतीक है।

मध्य भाग में नए कानूनों की प्रमुख विशेषताओं को प्रदर्शित किया गया है, जहाँ एक फॉरेंसिक विशेषज्ञ द्वारा वैज्ञानिक जांच, एक पुलिस अधिकारी द्वारा ई-साक्ष्य मोबाइल एप्लिकेशन का उपयोग तथा उंगलियों के निशानों के माध्यम से साक्ष्य-आधारित पुलिसिंग पर बल दिया गया है। मोबाइल फॉरेंसिक वैन, तकनीकी उपकरणों के एलईडी डिस्प्ले तथा आधुनिक नियंत्रण कक्ष से ईआरएसएस संचालित करती महिला पुलिस कांस्टेबल त्वरित प्रतिक्रिया और तकनीक के एकीकरण को दर्शाती हैं।

झांकी का पिछला भाग जन-केंद्रित न्याय प्रणाली की भावना को प्रस्तुत करता है - एक सुलभ, जवाबदेह और समावेशी न्याय व्यवस्था। साथ में चलते आधुनिक कानून प्रवर्तन कर्मी, व्यावसायिकता, गतिशीलता और जन-विश्वास का प्रतीक हैं।

- गृह मंत्रालय

Jan Kendrit Nyay Pranali

The tableau by the Ministry of Home Affairs highlights the historic enactment and implementation of three transformative laws - the Bharatiya Nyaya Sanhita (BNS), Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita (BNSS), and Bharatiya Sakshya Adhiniyam (BSA), 2023 - which came into force on 1 July 2024, guided by the principle "दण्ड से न्याय की ओर". These laws replace the colonial-era IPC, CrPC, and Indian Evidence Act, marking a decisive shift towards a modern, citizen-centric justice system.

The front section depicts the three new law books placed atop the new Parliament Building, with the Constitution of India as the backdrop, symbolizing constitutional commitment and democratic legitimacy.

The central portion showcases key features of the new laws through visuals of a forensic expert conducting scientific investigation, a police officer using the e-Sakshya mobile application, and fingerprint analysis emphasizing evidence-based policing. A mobile forensic van, LED displays of technological tools, and a woman police constable operating the ERSS from a modern control room highlight the quick response with integration of technology.

The rear section represents the spirit of Jan Kendrit Nyay Pranali - an accessible, accountable, and inclusive justice system. Modern law enforcement personnel walking alongside symbolize professionalism, mobility, and public trust.

- MINISTRY OF HOME AFFAIRS

बुंदेलखंड की संस्कृति

यह झाँकी प्राचीन कालिंजर दुर्ग के माध्यम से बुंदेलखंड की गरिमा को प्रस्तुत करती है, साथ ही आधुनिक उत्तर प्रदेश की तीव्र गति से आगे बढ़ती हुई छवि को भी दर्शाती है।

झाँकी के अग्रभाग में कालिंजर की प्रसिद्ध शैल-कलाकृतियों में से एक, एकमुख लिंग स्थापित है, जो क्षेत्र की प्राचीन आध्यात्मिक परंपरा का प्रतीक है।

मध्य भाग में बुंदेलखंड की जीवंत हस्तशिल्प परंपराओं - मृदभांड कला, मनका शिल्प और स्थानीय व्यापार को प्रदर्शित करता है, जो क्षेत्र की आर्थिक रीढ़ को दर्शाता है। यह प्रदर्शित शिल्प बुंदेलखंड के ओडीओपी उत्पाद हैं, जो इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक आजीविकाओं को उजागर करते हैं। यह झांकी कालिंजर दुर्ग के नक्काशीदार पत्थर के स्तंभों और द्वारों तक जाती है, जहाँ पर्यटक इसके ऐतिहासिक गलियारों का अनुभव करते हैं, जो इसे संस्कृति और पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र बनाता है।

झाँकी के पीछे के भाग में प्रतिष्ठित नीलकंठ महादेव मंदिर प्रदर्शित है, जो कालिंजर की आध्यात्मिक और स्थापत्य विरासत को सुदृढ़ करता है। पिछला हिस्सा उत्तर प्रदेश के आधुनिक विकास के एक सशक्त चित्रण को दर्शाता है, जिसे किले से प्रेरित वास्तुशिल्पीय मुखौटे से प्रस्तुत किया गया है। बुंदेली कलाकार अपने लोक नृत्य से लोकजीवन की रंगीन परम्पराओं को प्रस्तुत करते हैं।

उत्तर प्रदेश की झांकी में एक्सप्रेसवे, औद्योगिक प्रगति, आधारभूत संरचना और नवयुगीन निर्माण की झलक एलईडी डिस्प्ले द्वारा दिखाई गई है - जो एक ऐसे राज्य को दर्शाते हैं जो अपनी परंपरा में दृढ़ता से रचा-बसा रहते हुए आत्मविश्वास से प्रगति की ओर बढ़ रहा है।

- उत्तर प्रदेश

Culture of Bundelkhand

This tableau presents the timeless grandeur of Bundelkhand through the iconic Kalinjar Fort, while highlighting the dynamic and fast-progressing face of modern Uttar Pradesh.

The front section of the tableau features an Ekamukha linga, one of Kalinjar's celebrated rock-cut sculptures, symbolising the region's ancient spiritual heritage.

The middle portion showcases Bundelkhand's living craft traditions - pottery, beadwork, and local commerce, capturing the essence of the region's economic backbone. The crafts represented are ODOP products of Bundelkhand, highlighting the rich cultural ethos and traditional livelihoods of this significant part of Uttar Pradesh. The tableau rises into the carved stone pillars and gateway of Kalinjar Fort, where visitors explore its historic corridors, emphasizing its importance as a landmark of culture and tourism.

The renowned Neelkanth Mahadev Temple is prominently showcased in the rear section of the tableau, reinforcing Kalinjar's spiritual and architectural legacy. The rear part transitions into a powerful depiction of Uttar Pradesh's modern development, presented through a fort-inspired architectural façade. Traditional Bundeli dancers bring colour and rhythm to the scene, representing the region's vibrant folk identity.

The tableau of Uttar Pradesh features through LED display, key visuals of expressways, industrial growth, infrastructure expansion, and new-age manufacturing - reflecting a state moving confidently towards progress while remaining firmly rooted in its heritage.

- UTTAR PRADESH

हॉर्नबिल महोत्सव – संस्कृति, पर्यटन एवं आत्मनिर्भरता का उत्सव

नागालैंड की झाँकी हॉर्नबिल महोत्सव को संस्कृति-आधारित पर्यटन और जमीनी स्तर पर आत्मनिर्भरता के सशक्त प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है, जो भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत की भावना को प्रदर्शित करती है।

झाँकी के केंद्र में स्थित सुसंस्कृत एवं भव्य 'ग्रेट इंडियन हॉर्नबिल' सांस्कृतिक संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन तथा नागालैंड की उन्नत होती आकांक्षाओं का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि जब विरासत और प्रकृति को उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से संजोया जाता है, तो वे आजीविका और गौरव के स्थायी स्रोत बन जाते हैं।

चमकीले रंगों, पारंपरिक जनजातीय रूपांकनों और जीवंत सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से झाँकी यह प्रदर्शित करती है कि हॉर्नबिल महोत्सव किस प्रकार आत्मनिर्भर पर्यटन के एक मॉडल के रूप में विकसित हुआ है, जो कारीगरों, बुनकरों, किसानों, कलाकारों, युवा उद्यमी एवं स्थानीय समुदायों को सशक्त बना रहा है। हस्तशिल्प, वस्त्र, संगीत, खान-पान, आतिथ्य एवं रचनात्मक उद्यम केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि सतत आर्थिक अवसर बनकर उभरते हैं।

यह झाँकी युवा सशक्तिकरण, पारंपरिक कौशलों के पुनरुत्थान तथा पर्यावरण-सांस्कृतिक स्थिरता को रेखांकित करती है और यह दर्शाती है कि विरासत-आधारित पर्यटन किस प्रकार पहचान को सुदृढ़ करते हुए आजीविका के नए मार्ग प्रशस्त करता है। यह एकता, सहनशीलता और समुदाय-प्रेरित विकास का संदेश देती है।

नागालैंड की झाँकी एक सरल किंतु गहन सत्य को उद्घोषित करती है: जब संस्कृति आजीविका बनती है, तब आत्मनिर्भरता साकार होती है।

हॉर्नबिल महोत्सव के माध्यम से नागालैंड राष्ट्र को यह प्रदर्शित करता है कि संस्कृति, पर्यटन और परंपरा मिलकर किस प्रकार आत्मनिर्भर भारत की भावना के अनुरूप आत्मविश्वासी, सतत एवं सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

- नागालैंड

The Hornbill Festival – Celebrating Culture, Tourism & Self-Reliance

Nagaland's tableau presents the Hornbill Festival as a powerful symbol of culture-led tourism and grassroots self-reliance, reflecting the spirit of Atma Nirbhar Bharat in India's Northeast.

At the heart of the tableau stands the 'Great Indian Hornbill', refined and majestic, symbolising cultural guardianship, ecological harmony, and Nagaland's rising aspirations. The Hornbill embodies how heritage and nature, when responsibly celebrated, become enduring sources of livelihood and pride.

Through vibrant colours, traditional tribal motifs, and dynamic cultural expressions, the tableau illustrates how the Hornbill Festival has evolved into a model of self-reliant tourism, supporting artisans, weavers, farmers, performers, youth entrepreneurs, and local communities. Crafts, textiles, music, cuisine, hospitality, and creative enterprises emerge not only as cultural expressions but as sustainable economic pathways.

The tableau's narrative underscores youth empowerment, revival of traditional skills, and eco-cultural sustainability, demonstrating how tourism rooted in heritage strengthens identity while generating livelihoods. It conveys a message of unity, resilience, and community-driven growth.

Nagaland's tableau proclaims a simple yet profound truth: When culture becomes livelihood, self-reliance becomes a reality.

Through the Hornbill Festival, Nagaland showcases to the nation how culture, tourism, and tradition together can build confident, sustainable, and empowered communities, truly reflecting the essence of Atmanirbhar Bharat.

- NAGALAND

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के शहादत के 350वें वर्ष को समर्पित

झांकी के अग्र भाग में एक आध्यात्मिक आभा से आलोकित हाथ का प्रतीक दर्शाया गया है, जो श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के मानवीय, करुणामय और संरक्षणकारी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। इसके सामने की ओर घूमते हुए आकाशीय 'एक ओंकार' (ईश्वर एक है) को दर्शाया गया है और साथ ही इसमें एक चादर प्रदर्शित है, जिस पर 'हिंद दी चादर' अंकित है, जो उत्पीड़न से शरण चाहने वालों के लिए सुरक्षा का प्रतीक है।

झांकी के मध्य भाग में रागी जत्थों द्वारा आयोजित शब्द कीर्तन को दर्शाया गया है, जिसके पृष्ठभूमि में खंडा साहिब का स्मारक है, जो पूरे वातावरण को अलौकिक स्वरुप प्रदान करता है। यह स्थान दिल्ली स्थित गुरुद्वारा श्री सीस गंज साहिब के ठीक सामने स्थित है। इस चौक पर शब्द कीर्तन एक दैनिक अनुष्ठान है।

झांकी के अंतिम भाग पर गुरुद्वारा श्री सीस गंज साहिब का चित्रण किया गया है, वह स्थल जहाँ श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी ने शहादत प्राप्त की।

झांकी के साइड पैनलों में भाई मती दास जी, जिन्हें जिंदा आरे से चीर दिया गया; भाई सती दास जी, जिन्हें रुई में लपेटकर आग में जला दिया गया; तथा भाई दयाला जी, जिन्हें देग में जिंदा उबाल दिया गया, उनकी शहादत का चित्रण किया गया है। ये सभी श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के समर्पित अनुयायी थे और गुरु साहिब द्वारा प्रतिपादित उच्च आदर्शों का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी सर्वोच्च परंपराओं का निर्वहन करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

- पंजाब

Dedicated to 350th year of Martyrdom of Sri Guru Tegh Bahadur Sahib

The front section of the tableau comprises a symbol of Hand exuding a spiritual aura signifying the humanitarian, compassionate & conservative approach of Sri Guru Tegh Bahadur Sahib Ji. The celestial 'EK ONKAR' (God is One) is depicted in a revolving manner in front and a piece of cloth with 'HIND DI CHADAR' embossed on it is also depicted, symbolizing protection for those seeking shelter from oppression.

The middle section of the tableau incorporates the Shabd Kirtan being held by Raagi Singhs with a monument of Khanda Sahib in the background lending a transcendental colour to the surroundings. This place is right in front of Gurudwara Sri Sis Ganj Sahib in Delhi. The Shabd Kirtan at this chowk or square is a daily ritual.

At the rear section of the tableau is Gurudwara Sri Sis Ganj Sahib, the place where Sri Guru Tegh Bahadur Sahib Ji was martyred.

The side panels of the tableau showcase the martyrdom of Bhai Mati Dass Ji, who was sawed alive; Bhai Sati Dass Ji, who was tied in Cotton which was set on fire; and Bhai Dyala Ji, who was boiled alive in a cauldron. They were the devoted companions of Sri Guru Tegh Bahadur Sahib Ji and following the lofty ideals of Guru Sahib, they also chose to embrace martyrdom in the highest traditions of humanity.

- PUNJAB

वॉटर मेट्रो और 100% डिजिटल साक्षरता: आत्मनिर्भर भारत के लिए आत्मनिर्भर केरल

केरल की झाँकी, भारत की पहली वॉटर मेट्रो और 100% डिजिटल साक्षरता की उपलब्धि को प्रदर्शित करती है। यह एक "आत्मनिर्भर भारत" के लिए "आत्मनिर्भर केरल" की ओर बढ़ते समावेशी विकास को दिखाता है।

झांकी का अग्र भाग डिजिटल साक्षरता की ब्रांड एंबेसडर श्रीमती सरसु को ग्रामीण परिवेश में स्मार्टफोन और लैपटॉप पर काम करते हुए प्रदर्शित करता है। वह जमीनी स्तर पर डिजिटल सशक्तिकरण का प्रतीक हैं। उनका सोशल मीडिया चैनल, जो उनके पाक-कौशल को दिखाता है और लगातार दर्शकों को आकर्षित करता है, एक आत्मनिर्भर, डिजिटल रूप से सक्षम जीवन को भी दर्शाता है। केरल के खास मसाले और कृषि उत्पाद ग्रामीण आकर्षण बढ़ाते हैं, जो डिजिटल पहुँच द्वारा समर्थित समृद्ध जीवन को उजागर करते हैं।

झांकी के पिछले हिस्से में एक टर्मिनल के साथ एक पूरी तरह से वॉटर मेट्रो नाव दिखाई गई है। हरित गतिशीलता का प्रतीक, यह कोच्चि के बैकवाटर में द्वीपवासियों के लिए आसान कनेक्टिविटी प्रदान करता है। यह यूनिट जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को दिखाती है, जिसमें हरित कर्म सेना के सदस्य भी शामिल हैं। झाँकी के साथ दोनों तरफ चार लोक नृत्य कलाकार हैं, जो राज्य के सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

यह झाँकी परंपरा, डिजिटल समावेशन, महिला सशक्तिकरण और स्थायी गतिशीलता का मिश्रण है। यह दिखाता है कि कैसे डिजिटलीकरण और हरित परिवहन अधिक आत्मनिर्भर केरल के लिए समृद्धि का मंत्र बन गए हैं, जो आत्मनिर्भर भारत में योगदान दे रहा है।

- केरल

Water Metro & 100% Digital Literacy: Atmanirbhar Kerala for Atmanirbhar Bharat

Kerala's Tableau encapsulates India's first Water Metro and the achievement of 100% Digital Literacy. It showcases inclusive development moving toward an "Atmanirbhar Kerala" for an "Atmanirbhar Bharat."

The front section of the tableau presents Smt. Sarasu, the Brand Ambassador for Digital Literacy, in a rural setting, working with a smartphone and laptop. She symbolizes grassroot digital empowerment. Her social media channel, which showcases her cooking skills and attracts a steady flow of viewers, demonstrates a self-reliant, digitally enabled life. Kerala's signature spices and agricultural products add rural charm, highlighting a prosperous life supported by digital access.

The rear of the tableau presents a full-scale Water Metro boat with a terminal behind it. A symbol of green mobility, it provides easy connectivity for islanders in Kochi's backwaters. The unit showcases people from all walks of life, including members of the Haritha Karma Sena. Four folk dance artists accompany the tableau on both sides, depicting the cultural heritage of the state.

This tableau blends tradition, digital inclusion, women's empowerment, and sustainable mobility. It illustrates how digitalization and green transport have become the Samriddhi ka Mantra for a more self-reliant Kerala, contributing to an Atmanirbhar Bharat.

- KERALA

स्वतंत्रता का मन्त्र - वन्दे मातरम्

हिमाचल प्रदेश, जिसे देव भूमि के रूप में पूजा जाता है, उतनी ही प्रतिष्ठा से वीर भूमि - वीरों की धरती - के रूप में भी जाना जाता है। इसकी बर्फ़ से ढकी चोटियों और निर्मल नदियों की धारा से साहस और देशभक्ति स्वाभाविक रुप से जन्म लेते हैं। भारत के प्रथम परम वीर चक्र प्राप्तकर्ता की जन्मभूमि रहे हिमाचल प्रदेश ने राष्ट्र को 1,203 वीरता पुरस्कार दिए हैं, जिनमें चार परमवीर चक्र, दो अशोक चक्र और दस महावीर चक्र भी शामिल हैं, जो देश में एक अद्वितीय वीरता की गाथा रचते हैं।

यह झांकी उसी अमर वीरभाव को समर्पित है। यह उन वीर सपूतों और बेटियों को सजीव नमन है, जो पर्वतों की दृढ़ शक्ति को अपने भीतर समेटे, राष्ट्र की पुकार पर अटूट संकल्प और सर्वोच्च बलिदान के साथ आगे बढ़ते हैं। उनकी साहस भरी कहानियाँ आज भी घाटियों में गूँजती हैं, हवाएँ पीढ़ियों तक उनकी वीरता की प्रतिध्वनियाँ पहुँचाती हैं।

सशस्त्र बलों में देश के प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक, हिमाचल प्रदेश की बहादुरी केवल इतिहास का अध्याय नहीं है - यह यहाँ के लोगों की रगों में प्रवाहित एक विरासत है। पवित्रता और शौर्य के इस संगम को दर्शाती यह झांकी राज्य की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर और गौरवशाली सैनिक परंपरा को उजागर करते हुए राष्ट्र को यह स्मरण कराती है कि हिमाचल प्रदेश वास्तव में दिव्य आशीष और अटूट देशभक्ति की सच्ची वीर भूमि है।

- हिमाचल प्रदेश

Mantra of Freedom - Vande Mataram

Himachal Pradesh, revered as Dev Bhoomi - the Land of the Gods - is equally honoured as Veer Bhoomi - the Land of the Brave. From its snow-clad peaks to its crystal-clear rivers, courage and patriotism rise naturally from the very soil of this Himalayan state. The homeland of India's first Param Vir Chakra recipient, Himachal Pradesh has given the nation 1,203 gallantry award winners including four Param Vir Chakras, two Ashok Chakras, and ten Maha Vir Chakras also, a legacy unmatched in the country.

This tableau is a tribute to that timeless spirit. It stands as a living salute to the brave sons and daughters who embody the strength of the mountains, answering the nation's call with unyielding resolve and supreme sacrifice. Their heroic stories echo across the valleys, carried by winds that whisper tales of valour to generations.

As one of India's foremost contributors to the armed forces, Himachal Pradesh's bravery is not just a chapter in history - it flows in the veins of its people. Blending the sacred with the heroic, the tableau highlights the state's spiritual heritage and proud martial tradition, reminding the nation that Himachal Pradesh is truly a cradle of divine grace and fearless patriotism.

- HIMACHAL PRADESH

जम्मू-कश्मीर की हस्तकलाएँ और लोक नृत्य

यह झांकी रेशमी चित्र की तरह खुलती है और जम्मू-कश्मीर की संस्कृति को एक सुंदर रुप में दिखाती है, जहाँ कला और नृत्य साथ-साथ दिखाई देते हैं।

बाईं ओर पारंपरिक हस्तशिल्प नजर आते हैं। बारीक नक्काशी वाला समोवर, कहानी कहती कानी शॉलें, सुंदर डिज़ाइन वाले कालीन और अखरोट की लकड़ी से बनी नक्काशीदार वस्तुएँ दिखाई देती हैं। रंग-बिरंगे पेपर माशी के सामान और पहाड़ी लघु चित्रकला, खासकर बसोहली शैली, सदियों पुरानी कला को दर्शाती हैं। औज़ारों, करघों और ब्रशों के बीच ये सभी कलाकृतियाँ उन कारीगरों को सम्मान देती हैं जो मेहनत और धैर्य से इन परंपराओं को जीवित रखते हैं।

कश्मीर की लकड़ी की कारीगरी के साथ-साथ केसर के फूल भी दिखाए गए हैं। बैंगनी खेत और लाल केसर की डोरियाँ इस क्षेत्र की पहचान और प्रकृति से जुड़ी विरासत को दर्शाती हैं।

दाईं ओर माहौल जीवंत हो जाता है। रबाब और संतूर की मधुर धुनों पर कलाकार सुंदर वेशभूषा में रौफ, कुड, पहाड़ी, भदरवाही और गोजरी जैसे लोक नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

इस तरह हस्तशिल्प और लोक नृत्य मिलकर एक जीवंत चित्र बनाते हैं, जो प्राचीन होने के साथ-साथ आज भी उतना ही जीवित और ऊर्जावान है। यह जम्मू-कश्मीर की समृद्ध और अटल सांस्कृतिक आत्मा को दर्शाता है।

- जम्मू-कश्मीर

Handicrafts and Folk Dances of Jammu & Kashmir

The tableau unfolds like a silken tapestry, presenting Jammu & Kashmir as a seamless cultural continuum where craftsmanship and performance unite in a radiant narrative.

On the left, ancestral arts shine with timeless elegance: a finely engraved samovar, cascading Kani shawls woven with stories, carpets rich in geometric harmony and walnut-wood carvings alive with delicate filigree. Papier-mâché works glow in vibrant hues, while Pahari miniature paintings, especially the bold Basohli style - reflect centuries of refined devotion. Surrounded by chisels, looms, and brushes, these creations honour the artisans whose skill and patience sustain these traditions.

Complementing Kashmir's woodcraft, saffron blossoms rise as the region's soul in bloom - purple fields and crimson threads symbolising a heritage shaped by sun, soil and time.

To the right, stillness transforms into rhythm. The melodies of rabab and santoor, set the stage as performers in resplendent attire bring alive the grace of Rouf, the vigour of Kud, and the joyous spirit of Pahari, Bhadarwahi, and Gojri dances.

Together, craft and dance merge into a living symphony ancient yet vibrant, echoing the enduring cultural spirit of Jammu & Kashmir.

- JAMMU & KASHMIR

समृद्धि का मंत्र - आत्मनिर्भर भारत

"भारत भूकंप, बाढ़, चक्रवात एवं अन्य आपदाओं से निरंतर जूझता रहा है। जीवन की सुरक्षा और विकास की निरंतरता सुनिश्चित करने हेतु आपदा जोखिम न्यूनीकरण आज राष्ट्रीय प्राथमिकता बन चुका है। 26 जनवरी 2001 का भुज भूकंप एक निर्णायक क्षण था, जिसने विनाश के बीच पुनर्निर्माण, आपदा प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता की नई राह दिखाई।

इस झांकी में आपदा के बाद बचाव कार्य, तकनीक आधारित पूर्व-चेतावनी प्रणालियाँ, सुरक्षित आवास, विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम तथा सुदृढ़ ग्रामीण-शहरी ढांचे को दर्शाया गया है। एनडीएमए में स्थापित आधुनिक नियंत्रण कक्ष चौबीसों घंटे आपदाओं की निगरानी करता है तथा संभावित जोखिम क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों को पूर्व चेतावनी देने के साथ-साथ सभी संबंधित हितधारकों की त्वरित तैनाती सुनिश्चित करता है।

एनडीएमए के नेतृत्व में देश आज तैयारी, प्रशमन और क्षमता निर्माण पर विशेष बल दे रहा है। प्रशिक्षित एनडीआरएफ बल तथा 'आपदा मित्र' जैसे कार्यक्रम से समुदाय को प्रथम मोचक के रूप में सशक्त बनाया जा रहा है। विद्यालयों में सुरक्षा अभ्यास और युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुरक्षित भविष्य की नींव रखती है।

यह झांकी एक सुरक्षित, सजग और समृद्ध भारत के प्रति एनडीएमए की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।"

- एनडीएमए एवं एनडीआरएफ

Samridhi Ka Mantra - Atmanirbhar Bharat

"India has continually faced earthquakes, floods, cyclones, and other disasters. To ensure the protection of lives and the continuity of development, Disaster Risk Reduction has become a national priority, today. The Bhuj earthquake of 26 January 2001 was a defining moment, which, amid devastation, showed a new path of reconstruction, disaster resilience, and self-reliance.

This tableau depicts post-disaster rescue operations, technology-based early warning systems, safe housing, school safety programmes, and strengthened rural and urban infrastructure. The 24×7 Control Room established at NDMA continuously monitors hazards and, in coordination with all concerned Early Warning Agencies, ensures timely dissemination of early warnings to communities living in risk-prone areas as well as rapid deployment of response resources to affected regions.

Under the leadership of NDMA, the country today places special emphasis on preparedness, mitigation, and capacity building. Trained NDRF forces and initiatives such as Aapda Mitra are empowering communities as first responders. Safety drills in schools and the active participation of youth are laying the foundation for a secure future.

This tableau reflects NDMA's unwavering commitment towards a safe, aware, and prosperous India."

- NDMA & NDRF

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भारतीय स्कूल शिक्षा का विकसित भारत की ओर गतिवर्धन

शिक्षा मंत्रालय की यह झांकी भारत की शाश्वत ज्ञान विरासत को सम्मानित करते हुए - आर्यभट के अभूतपूर्व शून्य से लेकर आज के जीवंत शिक्षार्थियों तक - पीएम श्री विद्यालय के गौरवशाली स्तंभ के तले, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनइपी) 2020 की परिकल्पना को साकार करती है।

झांकी के अग्रभाग में, शून्य और ग्लोब पकड़े बच्चों को आर्यभट आशीर्वाद दे रहे हैं जो विश्व में भारत के योगदान और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के लिए तैयार पीढ़ी को मशाल सौंपने का प्रतीक हैं। पंख एनईपी 2020 की गति, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को दर्शाते हैं।

वर्चुअल रियलिटी हेडसेट पहने बच्चे "प्राचीन जड़ें, डिजिटल कौशल" चित्रित करते हैं, जबकि जादुई पिटारा स्वदेशी खिलौनों और बहुभाषी सामग्रियों के माध्यम से मातृभाषा में शिक्षा को दर्शाता है।

पौधे लगाते हुए बच्चे मिशन लाइफ की ओर प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं जबकि एक और शिक्षार्थी उपकरणों के प्रयोग से कौशल शिक्षा प्राप्त कर रही है। झांकी के केंद्र में कला, योग और खेल अनुभवात्मक शिक्षा दर्शा रहे हैं, जबकि एक रोबोटिक हाथ बच्चों को परंपरा और प्रौद्योगिकी के मिश्रित मार्ग पर बढ़ते हुए दर्शाता है।

झांकी विकसित भारत 2047 टॉवर पर समाप्त होती है, जो स्मार्ट कक्षा और प्रयोगशालाओं को नवाचार केंद्र के रुप में दिखाता है।

झाँकी का केंद्रीय संदेश: एनईपी 2020 भारतीय स्कूल शिक्षा नीति में सुधारों को गति प्रदान करने वाला राकेट है, जो देश को विकसित भारत 2047 की ओर अग्रसर कर रहा है।

- शिक्षा मंत्रालय

National Education Policy 2020 : Rocketing Indian School Education on the Path to Viksit Bharat

This tableau by Ministry of Education, honours Bharat's eternal knowledge legacy - from Aryabhata's pioneering Shunya to today's vibrant learners - under the proud arch of PM SHRI School, embodying the vision of the National Education Policy (NEP) 2020.

At the front of the tableau, Aryabhata blesses children holding Shunya and a globe, symbolizing India's contribution to the world as also the baton being passed to a future-ready generation, embracing a knowledge economy. Wings evoke NEP 2020's momentum, fostering confidence rooted in Atmanirbharata.

Children with VR headsets depict "Ancient Roots, Digital Wings", while Jaadui Pitara highlights joyful, play & mother-tongue-based foundational learning with indigenous toys and multilingual materials.

Children planting sapling embody Mission LiFE's stewardship, while another learner hones her skills with tools, underscoring the centrality of skill education. Tableau's center showcases experiential learning in arts, yoga, and sports, while a robotic hand fuses tradition with technology.

The tableau culminates at the Viksit Bharat 2047 Tower, showcasing smart classroom and tinkering labs as centres of innovation.

Central message of the Tableau: NEP 2020 is the rocket giving the much-needed acceleration to reforms in Indian school education system propelling the nation to Viksit Bharat 2047.

- MINISTRY OF EDUCATION

स्वामित्व योजना : आत्मनिर्भर पंचायत से समृद्ध एवं आत्मनिर्भर भारत

पंचायती राज मंत्रालय की झांकी स्वामित्व (ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ गांवों का सर्वेक्षण और मानचित्रण) योजना के परिवर्तनकारी प्रभाव को दर्शाती है, जिसका शुभारम्भ माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 24 अप्रैल 2020 को किया गया था। झांकी यह दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय संपत्ति का कानूनी स्वामित्व नागरिकों, पंचायतों और राष्ट्र के लिए सुरक्षा, गरिमा और आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव बनता है।

झांकी के अग्र भाग में, खुली हथेली पर रखा सुदृढ़ ग्रामीण घर संपत्ति स्वामित्व से प्राप्त आश्वासन और स्थिरता का प्रतीक है। हथेली को पारंपरिक आलता से सजे महिला हाथ के रूप में दर्शाया गया है, जो महिलाओं के सम्मान और घरेलू संपत्ति में उनके वैध अधिकार को दर्शाता है। प्रवेश द्वार पर लगा पारम्परिक तोरण समृद्धि का संकेत देता है, जबकि प्रमुख रुप से प्रदर्शित घर की चाबियां स्वामित्व योजना के माध्यम से प्राप्त वैध अधिकार और सशक्तिकरण को दर्शाती हैं। पास में खेलते बच्चे संपत्ति कार्डो के माध्यम से मिलने वाले आत्मविश्वास,सुरक्षा और सुदृढ़ पारिवारिक आधार को व्यक्त करते हैं।

झांकी का मध्य भाग एक लघु ग्रामीण बसावट के माध्यम से स्वामित्व योजना की कार्यान्वयन प्रक्रिया को दर्शाता है। ड्रोन आधारित सर्वेक्षण, चूना मार्किंग और जमीनी स्तर की गतिविधियां सटीक मानचित्रण और सीमांकन को दिखाती हैं। अस्पष्ट भूमि अभिलेखों से प्रामाणिक डिजिटल संपत्ति मानचित्रों की ओर यह परिवर्तन विवाद समाधान, पंचायत योजना और बेहतर आजीविका के लिए भूमि मुद्रीकरण में सहायक है। स्वच्छ सड़कों, हरियाली, जल निकायों और घरों के साथ ग्रामीण परिदृश्य सुव्यवस्थित विकास और खुशहाली को प्रस्तुत करता है।

झांकी के पिछले भाग में शांतिपूर्ण विवाद समाधान, संपत्ति कार्ड के माध्यम से बैंक ऋण तक पहुंच और प्रभावी स्थानीय शासन का प्रतीक एक पंचायत भवन जैसे प्रमुख परिणामों को दर्शाया गया है। यह झांकी दर्शाती है कि सुरक्षित मालिकाना हक परिवारों को मज़बूत बनाता है, सशक्त पंचायतों का निर्माण करता है और आत्मनिर्भर भारत में योगदान देता है।

- पंचायती राज मंत्रालय

SVAMITVA Scheme : Aatmanirbhar Panchayat se Samriddh evam Aatmanirbhar Bharat

The tableau of the Ministry of Panchayati Raj presents the transformative impact of the SVAMITVA (Survey of Villages and Mapping with Improvised Technology in Village Areas) Scheme, launched by the Hon'ble Prime Minister on 24 April 2020. It highlights how legal ownership of residential property in rural areas forms the foundation of security, dignity and self-reliance for citizens, Panchayats and the nation.

At the front of tableau, a well-built rural house resting on an open palm symbolizes assurance and stability achieved through property ownership. The palm, depicted as a woman's hand adorned with aalta, signifies women's dignity and their rightful place in household ownership. A traditional toran at the entrance denotes prosperity, while prominently placed house keys represent lawful possession and empowerment under SVAMITVA. Children playing nearby convey confidence, safety and stronger family foundations enabled by Property Cards.

The middle section of tableau portrays the implementation of SVAMITVA through a miniature village setting. Drone-based surveys, chuna marking and ground-level activities demonstrate accurate mapping and boundary demarcation. This transition from unclear land records to authoritative digital property maps supports dispute resolution, Panchayat planning and land monetization for improved livelihoods. Clean roads, greenery, water bodies and houses present an image of orderly development and well-being.

At the rear of the tableau depicts key outcomes such as peaceful dispute resolution, access to bank credit through Property Cards and a Panchayat Bhawan symbolizing effective local governance. The tableau shows that secure ownership strengthens families, builds empowered Panchayats and contributes to an Aatmanirbhar Bharat.

- MINISTRY OF PANCHAYATI RAJ

गणेशोत्सव : आत्मनिर्भरता का प्रतीक

समृद्ध संस्कृति की समृद्ध भूमि महाराष्ट्र में सार्वजनिक और घरेलू गणेशोत्सव का सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व है। महाराष्ट्र का गणेशोत्सव सामाजिक समरसता का उत्सव है। सामाजिक एकता, संस्कृति-संवर्धन, धार्मिक पर्यटन तथा आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से गणेशोत्सव का महत्व स्पष्ट होता है। गणेशोत्सव की अवधि के दौरान राज्य में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से भारी आर्थिक लेन-देन होता है, जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है। इस झांकी के माध्यम से व्यक्त की गई आत्मनिर्भरता आर्थिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता है।

सार्वजनिक गणेशोत्सव के इस महत्व को ध्यान में रखते हुए, महाराष्ट्र सरकार वर्ष 2025 से सार्वजनिक गणेशोत्सव को "राज्य महोत्सव" के रुप में मना रही है। इसी पृष्ठभूमि में, उत्सवों की भूमि महाराष्ट्र इस वर्ष "गणेशोत्सव: आत्मनिर्भरता का प्रतीक" विषय पर यह झांकी प्रस्तुत कर रहा है।

झांकी के अग्रभाग में गणेशोत्सव से संबंधित एक ढोल तथा उसे बजाती हुई एक महिला का भव्य दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

झांकी के पीछे के भाग में भगवान गणेश की मूर्ति गढ़ते हुए एक मूर्तिकार, मध्य भाग में गणेश विसर्जन के लिए जाते हुए एक गणेशभक्त, तथा अंतिम भाग में महाराष्ट्र के अष्टविनायक की प्रतिकृतियों वाला एक मंदिर दर्शाया है। इसके अतिरिक्त, झांकी में गणेशोत्सव से जुड़ी अन्य सांस्कृतिक झलकियाँ भी प्रदर्शित की गई है।

कर्तव्यपथ पर झांकी के दोनों ओर पारंपरिक वेशभूषा में महिलाएं लेझीम लोक नृत्य का प्रदर्शन कर रही हैं।

गणेशोत्सव का महत्व, परंपराएं और संस्कृति, झांकी के संचलन के दौरान एक जोशपूर्ण गीत के माध्यम से प्रस्तुत की गई है।

- महाराष्ट्र

Ganeshotsav : A Symbol of Atmanirbharta

In Maharashtra, a land enriched with a vibrant cultural heritage, public and household Ganeshotsav holds special cultural and religious significance. Ganeshotsav in Maharashtra is a celebration of social harmony. Its importance is reflected through social unity, cultural preservation, religious tourism, and economic activities. During the Ganeshotsav period, extensive economic activity takes place across the state, generating substantial financial transactions and thereby promoting economic self-reliance. This tableau encompasses economic, environmental, and cultural self-reliance.

Recognizing the significance of public Ganeshotsav, the Government of Maharashtra has been celebrating public Ganeshotsav as a "State Festival" since the year 2025. Maharashtra, known as the land of festivals, is presenting the tableau this year on the theme "Ganeshotsav: A Symbol of Self-Reliance."

The front section of the tableau features a grand depiction of a traditional drum associated with Ganeshotsav, being played by a woman.

The rear section of the tableau portrays a sculptor crafting an idol of Lord Ganesha, the central section depicts a devotee proceeding for Ganesh immersion while carrying the idol, and the final section showcases a temple featuring replicas of the Ashtavinayak of Maharashtra. In addition, other cultural elements associated with Ganeshotsav are also displayed in the tableau.

On both sides of the tableau along Kartavya Path, women dressed in traditional attire are performing the Lezim folk dance.

The significance, traditions, and cultural essence of Ganeshotsav is presented through an energetic song during the procession of the tableau.

-MAHARASHTRA

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल

यह झांकी भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल की निर्णायक भूमिका को दर्शाती है, जो सांस्कृतिक जागरण से लेकर क्रांतिकारी नेतृत्व तक की यात्रा को रेखांकित करती है।

झांकी के अग्रभाग में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय और उनके द्वारा 1875 में रचित वंदे मातरम् को प्रदर्शित किया गया है, जो देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का कालजयी प्रतीक बना। अग्रिम पंक्ति में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का नेतृत्व दर्शाया गया है, जिनके साहसिक नेतृत्व और आज़ाद हिंद फ़ौज (आई एन ए) ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा दी। झांकी में रवींद्रनाथ टैगोर को भी दर्शाया गया है, जो अपने देशभक्तिपूर्ण साहित्य के माध्यम से नैतिक नेतृत्व और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक हैं। मातंगिनी हाज़रा और अन्य महिलाओं की भागीदारी बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और पुरुषों दोनों के साहस और बलिदान को उजागर करती है। पीछे की ओर खड़े खुदीराम बोस क्रांतिकारी उत्साह और निडर प्रतिरोध का प्रतीक हैं। छात्र और श्रमिक जनभागीदारी और सामूहिक शक्ति को दर्शाते हैं।

झांकी के पार्श्व पैनल में बंगाल के योगदान को महान विभूतियों के प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिनमें ऋषि अरबिंदो, बेनोय, बादल, दिनेश, बाघा जतिन, मास्टरदा सूर्य सेन, प्रीतिलता वादेदार, देशबंधु चित्तरंजन दास, स्वामी विवेकानंद, सिस्टर निवेदिता, काज़ी नज़रुल इस्लाम और रासबिहारी बोस शामिल हैं, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें तत्कालीन अलीपुर सेंट्रल जेल को भी दर्शाया गया है, जिसे वर्तमान में शहीदों के सम्मान में एक स्वतंत्रता संग्रहालय के रुप में विकसित किया गया है।

यह झांकी राष्ट्रगीत वंदे मातरम् की धुन पर भारत की स्वतंत्रता की राह को आकार देने वाले बंगाल के अमर योगदान, बलिदान और नेतृत्व को श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

- पश्चिम बंगाल

Bengal in the Freedom Movement of India

The tableau portrays Bengal's pivotal role in India's freedom struggle, tracing a journey from cultural awakening to revolutionary leadership.

The forefront of the tableau showcases Bankim Chandra Chattopadhyay and Vande Mataram, composed in 1875, which became a timeless symbol of patriotism and unity. Netaji Subhas Chandra Bose, taking charge at the front, whose leadership and Indian National Army (INA) energized the freedom movement. The tableau highlights Rabindranath Tagore, who represents moral leadership and cultural pride through his patriotic literature. Matangini Hazra and participating women highlight courage and sacrifice in the rural belt of Bengal across genders. Khudiram Bose standing at the rear reflects the Revolutionary zeal symbolizing fearless resistance. Students and workers depict mass participation and collective strength.

The side panel of the tableau represents the contribution of Bengal through the motifs of the eminent personalities of Bengal viz: Rishi Aurobindo, Benoy, Badal, Dinesh, Bagha Jatin, Masterda Surya Sen, Pritilata Waddedar, Deshbandhu Chittaranjan Das, Swami Vivekananda, Sister Nivedita, Kazi Nazrul Islam & Rashbehari Bose who played key role in Freedom Movement of India. It also showcases the then Alipore Central Jail, which has been developed presently as an independence museum in honour of the martyrs.

This tableau honours Bengal's enduring legacy, sacrifice and leadership that shaped India's path to independence in tune of National Song -Vande Matram.

- WEST BENGAL

प्रकाश गंगा : आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत को ऊर्जित करती हुई

विद्युत मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत यह झांकी भारत के विद्युत क्षेत्र की परिवर्तनकारी यात्रा को प्रभावशाली रूप में दर्शाती है जो एक आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण हेतु विश्वसनीय, डिजिटल और सतत ऊर्जा की दिशा में देश के प्रयासों को रेखांकित करती है। "प्रकाश गंगा" की थीम पर आधारित यह झांकी भारत के एकीकृत राष्ट्रीय ग्रिड में बिजली के निरंतर और निर्बाध प्रवाह का प्रतीक है।

झांकी की शुरुआत स्मार्ट मीटर के रूप में एक विशाल रोबोटिक आकृति से होती है, जिसके साथ पवन टर्बाइन दिखाई देती हैं, जो तकनीक, स्वचालन और नवीकरणीय ऊर्जा के समन्वय को दर्शाती हैं। इसका केंद्रीय भाग "स्मार्ट पावर, स्मार्टर होम" की अवधारणा को रूफटॉप सोलर के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जहाँ नागरिकों को ऊर्जा का उत्पादक और उपभोक्ता - प्रोसुमर - बनाने पर जोर दिया गया है। एक ऊँचा ट्रांसमिशन टॉवर अंतिम छोर तक बिजली की सशक्त आपूर्ति का प्रतीक है।

झांकी में स्वच्छ गतिशीलता के भविष्य को भी प्रदर्शित किया गया है, जहाँ ईवी चार्जिंग स्टेशन और इलेक्ट्रिक स्कूटर के माध्यम से सतत-परिवहन को सक्षम बनाने में विद्युत क्षेत्र की भूमिका को दर्शाया गया है।

झांकी का पिछला भाग भारत की नवीकरणीय उर्जा क्षमता पर केन्द्रित है, जिसमे जल विद्युत बांध, भू-तापीय उर्जा और पवन टरबाइन प्रदर्शित है, जो स्वच्छ उर्जा के क्षेत्र में भारत के नेतृत्व का प्रतीक है। "स्विचिंग ऑन इंडिया" अंकन उन्नत ग्रिड निगरानी एवं नियंत्रण प्रणालियों का प्रतीक है।

राष्ट्रीय ग्रिड का प्रतीक दर्शाने वाली कुंडलित विद्युत केबलों पर स्थापित यह झांकी, देशभर में सभी नागरिकों के लिए विश्वसनीय, सस्ती और सतत ऊर्जा उपलब्ध कराने, समावेशी विकास को प्रोत्साहित करने तथा ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रति विद्युत मंत्रालय की प्रतिबद्धता को पुनर्स्थापित करती है।

- विद्युत मंत्रालय

Prakash Ganga : Powering an Aatmanirbhar and Viksit Bharat

The tableau of Ministry of Power presents India's transformative journey in the power sector, highlighting its shift towards sustainable, digital, and reliable energy in support of an Aatmanirbhar and Viksit Bharat. Anchored in the theme "Prakash Ganga" (River of Light), the tableau symbolises the continuous and seamless flow of electricity across India's integrated national grid.

The visual narrative begins with a large robotic Smart Meter accompanied by wind turbines, representing the integration of advanced technology, automation, and renewable energy for efficient power management. The central segment showcases the "Smart Power, Smarter Home" concept through rooftop solar installations, promoting citizens as prosumers - both producers and consumers of energy. A prominent transmission tower reflects robust last-mile connectivity.

The tableau also highlights the future of clean mobility with an EV charging station and electric scooter, underlining the power sector's role in enabling sustainable transportation.

The rear section focuses on renewable strength, featuring a hydroelectric dam, geothermal energy, and wind turbines, symbolising India's leadership in clean energy. The inscription "Switching on India" represents advanced grid monitoring and control systems.

Mounted on coiled electrical cables depicting the national grid, the tableau reaffirms the Ministry of Power's commitment to delivering reliable, affordable, and sustainable energy, ensuring inclusive growth and energy security nationwide.

- MINISTRY OF POWER

‘पुण्यश्लोक’ लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर

मध्यप्रदेश की झाँकी आत्मनिर्भरता, देशभक्ति की मूरत और साँस्कृतिक संरक्षिका लोकमाता देवी अहिल्याबाई पर केन्द्रित है।

अग्र भाग में हाथों में शिवलिंग लिए लोकमाता देवी अहिल्याबाई की चिर-परिचित प्रतिमा है। कमल के बीच स्थापित यह प्रतिमा, भारतीय मातृ शक्ति की सौम्य और गरिमामयी छवि को प्रस्तुत करती है।

मध्य भाग में माँ अहिल्याबाई के साथ मंत्रि-गण एवं सैनिक हैं। इस भाग के निचले हिस्से पर माँ अहिल्याबाई के शासनकाल में होलकर साम्राज्य द्वारा किए गए मंदिर जीर्णोद्धार और निर्माण की छवि है, जहाँ एक सैनिक पहरा दे रहा है ।

झाँकी के अंतिम मध्य भाग में महेश्वर का प्रसिद्ध घाट, मंदिर और किला प्रदर्शित है, जो देवी अहिल्याबाई की राजधानी, उनके प्रशासन की पहचान है। इसी भाग के नीचे नर्मदा नदी और घाट और नौका प्रदर्शित है जो इस भूमि के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सार को जागृत करते हैं। झाँकी के अंतिम छोर पर महेश्वर घाट पर अहिल्याबाई द्वारा स्थापित मंदिर के शिखर दिखाई दे रहे हैं और नीचे भित्तिचित्रों में लोकमाता अहिल्याबाई के मार्गदर्शन में महिलाएँ प्रसिद्ध महेश्वरी साड़ी की निर्माण इकाई में कार्य करती दिखाई दे रही हैं, जो उनके काल में नारी सशक्तीकरण और सम्मान के साथ स्वदेशी उत्पाद का एक जीवंत प्रमाण है।

इस झांकी के साथ लोक कलाकार पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं, जो लोकमाता देवी अहिल्याबाई के सम्मान में जीवंतता और लय का समावेश करते हैं।

- मध्यप्रदेश

‘Punyashlok’ Lokmata Devi Ahilyabai Holkar

The tableau of Madhya Pradesh is centered on Lokmata Devi Ahilyabai - the embodiment of self reliance, patriotism, and the guardian of culture.

In the front part, the familiar image of Lokmata Devi Ahilyabai is portrayed holding a sacred Shivling. Seated amidst a lotus, this figure reflects the serene and dignified presence of India’s eternal motherly strength.

The central portion depicts Devi Ahilyabai accompanied by her ministers and soldiers. Below this, scenes illustrate the restoration and construction of temples undertaken during her reign by the Holkar dynasty, with a vigilant soldier standing guard to symbolize protection and devotion.

The concluding middle section presents the renowned ghats, temples, and fort of Maheshwar - the capital and enduring symbol of Ahilyabai’s administration. Beneath this, the flowing Narmada River, its ghats, and boats are displayed, evoking the spiritual and cultural essence of the land. At the far end, the temple spires established by Ahilyabai rise above the Maheshwar ghats and below, murals depict women working in the celebrated Maheshwari sari weaving units under her guidance, a living testimony to women’s empowerment, dignity, and indigenous craftsmanship during her era.

The tableau is accompanied by folk artists performing traditional dances, adding vibrancy and rhythm to this homage to Lokmata Devi Ahilyabai.

- MADHYA PRADESH

खेती से सिलिकॉन तक : परंपरा से प्रगति और आत्मनिर्भरता

ओडिशा की झांकी आत्मनिर्भर भारत में उसके बहुआयामी योगदान को दिखाती है, जो कृषि और सांस्कृतिक जड़ों से लेकर नवाचार प्रेरित विकास तक की यात्रा को दर्शाती है। यह इस विश्वास को व्यक्त करता है कि आत्मनिर्भरता परंपरा में निहित है और प्रौद्योगिकी द्वारा मजबूत होती है।

झाँकी का अग्र भाग महिलाओं के नेतृत्व वाली और समावेशी भागीदारी पर राज्य के विशेष बल को दर्शाता है जो भारत की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में ओड़ीशा की भूमिका को उजागर करता है ।

झाँकी के मध्य भाग में प्रदर्शित सेमीकंडक्टर चिप तकनीकी विकास का प्रतीक है । इसके विपरीत ओर कोरापुट कॉफी सतत आजीविका और आदिवासी कृषि उत्कृष्टता को दर्शाती है। जीवंत हथकरघा और हस्तशिल्प प्रदर्शन, कारीगरी पर आधारित अर्थव्यवस्था और पारंपरिक कौशल के संरक्षण को प्रदर्शित करते हैं।

झाँकी के पिछले भाग में कोणार्क सूर्य मंदिर की प्रतिकृति ओड़ीशा की स्थापत्य कला का मुख्य आकर्षण है, जो एक शाश्वत कलात्मक विरासत का प्रतीक है। झाँकी के दोनों तरफ पट्टचित्र, आदिवासी कला, जगन्नाथ रथ का पहिया और चाँदी की बारीक नक्काशी राज्य की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं ।

'मिट्टी से सिलिकॉन तक' की प्रतीकात्मक यात्रा प्रस्तुत करते हुए, यह झांकी समृद्धि के मंत्र की भावना को दर्शाती है और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए ओडिशा की अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है।

- ओड़ीशा

Soil to Silicon : Tradition to Progress and Self-Reliance

Odisha's tableau depicts its multidimensional contribution to Atmanirbhar Bharat, tracing a journey from agrarian and cultural roots to innovation-driven growth. It conveys the belief that self-reliance is anchored in tradition and strengthened by technology.

The front section of the tableau emphasizes on women-led and inclusive participation, highlighting Odisha's role in India's socio-economic progress.

The middle section of the tableau features a semiconductor chip, symbolizing in technological advancement. On the opposite side, Koraput coffee represents sustainable livelihoods and tribal agriculture excellence. Live handloom and handicraft demonstrations showcase artisanal-based economy and the preservation of traditional skills.

At the rear of the tableau, a replica of the Konark Sun Temple serves as the architectural highlight, symbolizing a eternal artistic legacy. On both sides of the tableau, pattachitra paintings, tribal art, the Jagannath chariot wheel, and silver filigree motifs reinforce Odisha's cultural identity and craftsmanship.

By presenting a symbolic journey from 'Soil to Silicon', the tableau embodies the spirit of Samruddhi Ka Mantra and reaffirms Odisha's unwavering commitment to building an Atmanirbhar Bharat.

- ODISHA

समृद्धि की ओर: खेतों से अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार तक

मणिपुर की झांकी राज्य के अनूठे और उच्च-मूल्य वाले कृषि उत्पादों के तेजी से बढ़ते प्रभुत्व को प्रदर्शित करती है। ये उत्पाद, जो कभी केवल सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के प्रतीक थे, अब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अपनी विशेष पहचान बना रहे हैं। यह झाँकी तीन भौगोलिक संकेत (जी आई) टैग प्राप्त उत्पादों को प्रस्तुत कर रहे हैं, जो हजारों किसानों के जीवन को बदल रहे हैं और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

झांकी के अग्र भाग में मणिपुर की पूर्वी पहाड़ियों, उखरुल की 'सिरारखोंग हाथेई मिर्च' को दर्शाया गया है, साथ ही पारंपरिक पोशाक में एक महिला द्वारा इस फसल को काटते हुए दर्शाया गया है। आधिकारिक जीआई टैग का यह प्रतीक चिन्ह सभी प्रदर्शित उत्पादों के संरक्षित दर्जे को दर्शाता है।

मध्य भाग में मणिपुर घाटी के पौष्टिक और सुगंधित काले और सफेद चावल को चाक-हाउ की पारंपरिक मड़ाई और पछाई की प्रक्रिया को दर्शाया गया है। एपीडा की पहल के माध्यम से जापान, कोरिया, चीन और यूरोपीय संघ के देशों में निर्यात के लिए तैयार चाक-हाउ किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम को दर्शाता है।

झांकी के पिछले भाग में मणिपुर की पश्चिमी पहाड़ियों की आदिम संतरे की किस्म 'तामेंगलोंग संतरा' को एक तरंग-काई (पारंपरिक घर) के सामने प्रदर्शित किया है। यहाँ 'ऑर्गेनिक इंडिया' का चिन्ह राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (एनपीओपी) के तहत 400 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र के जैविक प्रमाणीकरण को दर्शाता है। यह प्रमाणीकरण बाजार मूल्य को बढ़ाता है और मणिपुर को पूर्णतः 'जैविक राज्य' बनाने के लक्ष्य में भी समर्थन करता है।

झाँकी के किनारे के पैनलों को राज्य पक्षी, 'नोंग-इन' को दर्शाने वाली नक्काशी से सजाया गया है।

- मणिपुर

Towards Prosperity: From Agricultural Fields to International Markets

The Manipur state tableau showcases the rapid ascent of the state's unique, high-value agricultural products. Once viewed primarily as symbols of cultural and natural heritage, these products are now gaining prominence in national and international markets. The tableau highlights three Geographical Indication (GI) tagged products that are transforming the livelihoods of thousands of farmers and contributing to the vision of an Atmanirbhar Bharat.

At the forefront of the tableau, Sirarakhong Hathei Chilli from the eastern hills of Manipur, Ukhrul, is depicted alongside a woman in traditional attire harvesting the crop. The official GI tag emblem signifies the protected status of all products displayed.

The middle section depicts the traditional threshing and winnowing of Chak-Hao, nutritious, aromatic black and white rice from the Manipur valley. Poised for export to Japan, Korea, China, and the EU through APEDA initiatives, Chak-Hao represents a significant stride towards farmers' self-reliance.

At the rear of the tableau, the Tamenglong Orange, a unique variety of oranges from the western hills of Manipur is displayed before a Taraeng-Kai (traditional house). The "Organic India" logo highlights the organic certification of over 400 hectares under the National Programme for Organic Production (NPOP). This certification enhances market value and supports Manipur's mission to become a fully 'organic state'.

The side panels of the tableau are embellished with relief work depicting the state bird, the Nong-in.

- MANIPUR

बीकानेर की उस्ता कला

उस्ता कला ऊँट की खाल पर 24 कैरेट सोने की पत्तियों और प्राकृतिक रंगों से की जाने वाली जादुई मीनाकारी (मुनव्वती कार्य) है। बीकानेर की इस शाही कला को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त है और इसे प्रतिष्ठित जीआई (भौगोलिक संकेत) टैग प्राप्त है।

यह कला मूल रूप से ईरान से आई और मुग़ल दरबारों में फली-फूली। इसे बीकानेर में राजा राय सिंह के समय उस्ताद कलाकारों द्वारा लाया गया। इसमें ऊँट के चमड़े को पहले ढाला जाता है और फिर उस पर सोने की मीनाकारी या 'मुनव्वती' (स्वर्ण उभार नक्काशी) की जाती है। इस कला में प्राकृतिक रंगों के साथ 24 कैरेट सोने की पत्ती का उपयोग किया जाता है, जिस से इसका सुनहरा रंग बहुत टिकाऊ हो जाता है।

झाँकी के अग्रभाग में एक रावणहत्ता वादक को 180 डिग्री घूमते हुए दिखाया गया है। किनारों पर लगे पैनलों को उत्कृष्ट उस्ता-सजावट वाले सुराही (पानी के कलश) और पारंपरिक दीपों से सजाया गया है।

झांकी के पृष्ठभाग पिछले हिस्से में एक घूमती हुई विशाल कुप्पी (चमड़े का तेल पात्र) प्रदर्शित किया गया है, जिसके बाद कुशल कारीगरों द्वारा इस शिल्प का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया गया है। इसका समापन एक भव्य, खूबसूरती से सजाई गई ऊंट की मूर्ति के साथ होता है। किनारों पर उस्ता शैली के मेहराब बने हुए हैं जो चर्मशिल्प की विभिन्न तकनीकों को प्रदर्शित करते हैं।

दृश्य की भव्यता को और बढ़ाने के लिए, झांकी के साथ साथ लोक कलाकार प्रसिद्ध 'गैर नृत्य' का प्रदर्शन करते हैं, जो राजस्थान का एक ऊर्जा से भरपूर पारंपरिक लोक नृत्य है।

- राजस्थान

Usta Art of Bikaner

Usta Art is a magical form of miniature embossed work (Munawwati work) done on camel hide using 24-karat gold leaves and natural colours. This royal craft from Bikaner is globally recognized and holds the prestigious GI (Geographical Indication) Tag.

This art originally originated from Iran and flourished in the Mughal courts. It was brought to Bikaner by master artists during the reign of Raja Rai Singh. The camel hide is first molded and then gold inlay work or 'munavvati' (gold embossed work) is applied to it. This art uses 24-carat gold leaf combined with natural dyes, making its golden color highly durable.

The front section of the tableau features a Ravanahatha player rotating at 180 degrees. The side panels are adorned with exquisite Usta-decorated surahis (water carafes) and traditional lamps.

The rear section of the tableau showcases a massive rotating Kuppi (leather oil flask), followed by skilled artisans demonstrating the live craft. It concludes with a majestic, beautifully decorated camel statue. The side panels feature Usta-style arches (Mehrabs) showcasing various leather craftsmanship techniques.

To complement the visual splendour, the tableau is accompanied by folk artists performing the famous 'Gair Dance', a high-energy traditional folk dance of Rajasthan.

- RAJASTHAN

वंदे मातरम्
– 150 वर्ष पूरे होने का स्मरणोत्सव

इस वर्ष केंद्रीय लोक निर्माण विभाग की पुष्प झांकी वंदे मातरम् राष्ट्रगीत के 150वें वर्ष पूर्ण होने की वर्षगांठ को प्रदर्शित कर रही है। 7 नवम्बर 2025 को भारत ने वंदे मातरम् को अपनाने की 150वीं वर्षगांठ मनाकर एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की।

झांकी के अग्रभाग में लो के साथ जलती हुई मशाल को दर्शाया गया है। यह दर्शाता है कि वंदे मातरम् ने स्वतंत्रता संग्राम में आज़ादी की मशाल का कार्य किया, जिसने भारतीय लोगो में देशभक्ति, एकता तथा दमन के खिलाफ़ प्रतिरोध की भावना जागृत कर गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का साहस दिया।

झांकी के पिछले हिस्से में वंदे मातरम् के रचयिता श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को दर्शाया गया है। वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने का यह उत्सव भारत की राष्ट्रीय पहचान के विकास में इस गीत के गहरे, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को दिखाता है। यह आयोजन न केवल श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के दृष्टिकोण की स्थायी प्रासंगिकता की पुष्टि करता है, बल्कि आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद, एकता और सांस्कृतिक आत्म-जागरुकता के विमर्श को आकार देने में इस गीत की भूमिका के बारे में पुनर्विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है।

ये शब्द हमें हमारे इतिहास से जोड़ते है, हमारे वर्तमान को आत्मविश्वास से भर देते है और हमे यह विश्वास दिलाने का साहस देते है कि कोई भी लक्ष्य हमारी पहुँच से बाहर नहीं है।

आँखों को मनमोहित करने वाली इस झांकी को प्राकृतिक, रंग-बिरंगे फूलों से तैयार किया गया है।

- केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

Vande Matram
– Commemoration of 150 Years

This year, the Central Public Works Department's floral tableau is showcasing the 150th anniversary of the national song Vande Mataram. On November 7, 2025, India marked a historic milestone by celebrating the 150th anniversary of the adoption of Vande Mataram.

The front of the tableau depicts a burning torch with flames. This symbolizes that Vande Mataram served as the torch of freedom in the freedom struggle, igniting a spirit of patriotism, unity and resistance against oppression among the Indian people, giving them the courage to break the chains of slavery.

The back of the tableau depicts Shri Bankim Chandra Chattopadhyay, the composer of Vande Mataram. The commemoration of 150 years of Vande Mataram underscores the song's profound historical and cultural significance in the evolution of India's national identity. The present observance not only reaffirms the enduring relevance of Bankim Chandra Chattopadhyay's vision but also invites renewed reflection on the song's role in shaping the discourse of nationalism, unity, and cultural self-awareness in modern India.

These words connect us to our history, fill our present with confidence and give us the courage to believe that no goal is beyond our reach.

The entire tableau is crafted in flowers in their natural, vibrant colours to give an exquisite eye pleasing experience.

- CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT

भारत गाथा : श्रुति, कृति, दृष्टि

"भारत गाथा : श्रुति, कृति, दृष्टि" प्राचीन कथावाचन से लेकर वैश्विक सामग्री केंद्र के रूप में भारत के उदय तक की यात्रा को प्रस्तुत करती है। यह झाँकी "ओम" की ब्रह्मांडीय ध्वनि से लेकर डिजिटल युग तक के प्रवाह के द्वारा आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को दर्शाती है।

झांकी के अग्र भाग में 'श्रुति', एक पीपल के पेड़ के नीचे भारत की मौखिक परंपरा को चित्रित करती है, जिसमें एक गुरु शिष्यों को शिक्षा दे रहे हैं और ध्वनि-तरंगों के रुपांकन ज्ञान की उत्पत्ति का प्रतीक हैं।

झांकी के मध्य भाग में 'कृति', लिखित अभिव्यक्ति की ओर बदलाव को अंकित करती है, जिसमें भगवान गणेश महाभारत लिख रहे हैं और साथ ही पांडुलिपियों, प्रदर्शन कलाओं और प्रारंभिक संचार परंपराओं के दृश्य दिखाए गए हैं।

झांकी के पिछले भाग में 'दृष्टि', सिनेमा, प्रसारण, प्रिंट और आधुनिक डिजिटल मीडिया को प्रदर्शित करती है। एक ऐतिहासिक कैमरा, फिल्म रील, उपग्रह प्रतीक, समाचार पत्र और बॉक्स ऑफिस भारत के मीडिया विकास को दर्शाते हैं। फिल्म निर्माताओं और कलाकारों की मूर्तियाँ उन रचनाकारों का सम्मान करती हैं जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक पहचान को आकार दिया। डिजिटल-युग के तत्व - एआई, एवीजीसी–एक्सआर, वर्चुअल प्रोडक्शन तल्लीन कर देने वाली कहानी कहने की कला की ओर बदलाव को उजागर करते हैं।

प्रदर्शन करने वाले कलाकार - डंडोरा, शास्त्रीय नर्तक, लोक समूह झाँकी को जीवंत बनाते हैं। यह विषय-वस्तु भारत को एक वैश्विक सामग्री केंद्र के रूप में स्थापित करने के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के लक्ष्य के अनुरुप है, जिसे विश्व दृश्य-श्रव्य और मनोरंजन शिखर सम्मेलन 2025 द्वारा और मजबूती मिली है। इस शिखर सम्मेलन ने "ऑरेंज इकॉनमी के उदय" को चिह्नित किया, जिसमें व्यापक वैश्विक भागीदारी और महत्वपूर्ण व्यावसायिक चर्चाएँ हुईं।

यह झाँकी एक सांस्कृतिक समयरेखा और एक दृष्टिकोण के रूप में खड़ी है, जो प्राचीन ज्ञान को डिजिटल नवाचार के साथ जोड़ती है।

- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

Bharat Gatha: Shruti, Kriti, Drishti

"Bharat Gatha: Shruti, Kriti, Drishti" presents India's journey from ancient storytelling to its rise as a global content hub. The tableau flows from the cosmic sound of "Aum" to the digital age, reflecting the vision of Atmanirbhar Bharat.

In the front part of the tableau, 'Shruti' depicts India's oral tradition under a Peepal tree, with a Guru teaching disciples and sound-wave motifs symbolising the origins of knowledge.

In the middle part of the tableau, 'Kriti' marks the transition to written expression, with Lord Ganesha inscribing the Mahabharata and visuals of manuscripts, performing arts, and early communication traditions.

In the rear part of the tableau, 'Drishti' showcases cinema, broadcasting, print, and modern digital media. A vintage camera, film reels, satellite symbols, newspapers, and Box office depict India's media evolution. Figures of filmmakers and artists honour the creators who shaped India's cultural identity. Digital-era elements - AI, AVGC-XR, virtual production highlight the shift to immersive storytelling.

Performing artists- Dandora, classical dancers, folk groups bring the tableau to life. The theme aligns with MIB's goal of positioning India as a global content hub, reinforced by World Audio-Visual & Entertainment Summit 2025. The Summit marked the "Dawn of the Orange Economy," with major global participation and significant business engagements.

The tableau stands as a cultural timeline and a vision statement, uniting ancient wisdom with digital innovation.

- MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING

पुदुचेरी की समृद्ध शिल्प विरासत, संस्कृति और ऑरोविल की परिकल्पना

केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी की झांकी, वहाँ के जीवंत सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक शिल्पकला और विश्व-प्रसिद्ध आध्यात्मिक नगरी ऑरोविल को प्रदर्शित करती है। यह टेराकोटा कला, मिट्टी के बर्तन और मूर्तिकला में पुदुचेरी की अटूट विरासत को उजागर करती है और पीढ़ियों से संरक्षित परंपराओं के कुशल कारीगरों का सम्मान करती है। यह झांकी क्षेत्र की पारंपरिक शिल्पकलाओं पर जोर देती है जो स्थानीय आजीविका और सांस्कृतिक विकास का सहारा है।

झांकी में सबसे आगे, ऑरोविल का स्वर्णिम मातृमंदिर मानव एकता, आध्यात्मिक आकांक्षा और वैश्विक शांति का प्रतीक है। ऑरोविल एक ऐसे सार्वभौमिक शहर की परिकल्पना का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोग सामूहिक विकास और सतत जीवन के उद्देश्य से एक साथ रहते हैं। ऑरोविल को एक सार्वभौमिक शहर के रूप में देखने का विचार पुदुचेरी से ही उत्पन्न हुआ है।

किनारों पर, टेराकोटा का हाथी, पारंपरिक घर और ग्रामीण स्थापत्य तत्व पुदुचेरी के मिट्टी की कला से गहरे जुड़ाव और महान कौशल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मध्य भाग में मिट्टी के बर्तन बनाने, मूर्तिकला, टेराकोटा शिल्प को प्रदर्शित किया जाता है और पिछले भाग में, विवाह समारोह का संचालन इस क्षेत्र के सांस्कृतिक महत्व को उजागर करता है। इसके अलावा, पुदुचेरी को मिट्टी के बर्तनों के शिल्प के लिए भौगोलिक संकेत टैग प्राप्त है, जो इस क्षेत्र की पहचान कराता है।

यह झांकी पुदुचेरी की उस उल्लेखनीय यात्रा को दर्शाती है जिसमें उसने अपनी पारंपरिक शिल्पकलाओं को संरक्षित करते हुए भविष्य के लिए एक प्रगतिशील, समावेशी और आध्यात्मिक रूप से प्रेरित दृष्टिकोण को अपनाया है।

- पुदुचेरी

Puducherry's Rich Heritage of Craft, Culture and Auroville's Vision

Union Territory Puducherry's tableau showcases the vibrant cultural heritage, traditional craftsmanship, and the globally admired spiritual township of Auroville. It highlights Puducherry's enduring legacy in terracotta art, pottery and sculpture, celebrating the skilled artisans of preserved traditions for generations. This tableau emphasizes the heritage crafts of the region that supports local livelihoods, cultural continuity, and community development.

At the front of the tableau, the golden Matrimandir of Auroville stands as a symbol of human unity, spiritual aspiration and global peace. Auroville represents the vision of a universal township where people from diverse backgrounds live together with a purpose of collective evolution and sustainable living. The very concept of Auroville as an Universal Township originated from Puducherry.

At the sides, the terracotta elephant, traditional household, and rural architectural elements represent Puducherry's deep connection and great skills with clay artistry.

The central portion showcases artisans engaged in pottery, sculpting, terracotta craftwork and at the back portion, conduct of wedding ceremony highlights the region's cultural value. Moreover, Puducherry has a Geographical indication tag for the pottery craft which identifies the unique handmade clay items.

This tableau reflects Puducherry's remarkable journey in preserving its traditional crafts while embracing a forward-looking, inclusive, and spiritually inspired vision for the future.

- PUDUCHERRY

वंदे मातरम् – 150 वर्षों की यात्रा

एक समय हर क्रांतिकारी के मुख से निकला 'वन्दे मातरम्' केवल एक गीत नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक है। श्री अरविन्द ने इसमें निहित सामूहिक चेतना को जगाने वाली उस आध्यात्मिक शक्ति को पहचाना था, जिसकी पुष्टि इतिहास ने भी की। 1875 में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत एक सभ्यता की पुकार के रूप में सामने आया, जिसमें राष्ट्र को मां के रूप में प्रस्तुत किया गया है, वह मां जो सुजलाम्, सुफलाम् है और प्रकृति तथा भावनाओं से परिपूर्ण है। औपनिवेशिक काल में जेलों, सभाओं और जुलूसों में इसके उद्घोष ने विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और आस्थाओं के लोगों को जोड़ा और भक्ति को शौर्य तथा काव्य को संकल्प में परिणत किया।

संस्कृति मंत्रालय की झांकी इस यात्रा को दृश्य रूप में प्रस्तुत करती है। वन्दे मातरम् की पांडुलिपि लिए एक ट्रैक्टर आगे चलता है जिसके पीछे भारत के चारों दिशाओं से आए लोक कलाकार सांस्कृतिक विविधता का दृश्य रचते हैं। झांकी के केंद्र में ज़ेन जी, विष्णुपंत पगनीस द्वारा राग सारंग में रची गई ऐतिहासिक धुन पर वन्दे मातरम् का गायन करते हैं। औपनिवेशिक सेंसरशिप से बचने के लिए गीत के अंतरों का क्रम उलटकर रची गई यह धुन एक ऐतिहासिक सांस्कृतिक विद्रोह का प्रतीक बन गई। इसमें शहीद मदन लाल ढींगरा और खुदीराम बोस को गीत का उद्घोष करते हुए दर्शाया गया है।

झांकी के अंत में, हाथ में तिरंगा लिए हुए भारतमाता को दिखाया गया है, जो पीढ़ियों से राष्ट्र को प्रेरित करती आ रही हैं। आज भारत गणतंत्र दिवस 2026 मना रहा है, तो वंदे मातरम हमें न केवल स्वतंत्रता को याद करने, बल्कि उस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए भी प्रेरित करता है।

- संस्कृति मंत्रालय

Vande Matram - 150 Years Journey

Once spoken by every revolutionary, Vande Mataram is far more than a song. Sri Aurobindo saw in it an inherent spiritual power capable of awakening collective consciousness, a vision that history has affirmed. Composed by Bankimchandra Chattopadhyay in 1875, it arose as a civilisational invocation, envisioning the nation as Mother, sujalām, suphalām, abundant in nature and spirit. In colonial times, it restored dignity, turning devotion into courage and poetry into resolve, uniting people across regions, languages, and faiths in prisons, meetings, and marches, seeking reverence rather than conquest.

The Ministry of Culture's tableau gives this journey visual form. A moving tractor bears the manuscript of Vande Mataram, followed by folk artists from India's four directions, embodying cultural plurality. At the heart of the tableau, Gen Z sings Vande Mataram, inspired by the historic tune of Vishnupant Pagnis, who recorded the song in Raga Sarang. By reversing the order of the stanzas to evade colonial censorship, his Rashtrageet emerged as a landmark act of artistic rebellion. Martyrs Madan Lal Dhingra and Khudiram Bose are depicted invoking the song.

The tableau culminates with Bharat Mata holding the Tricolour, an enduring source of inspiration across generations. As India celebrates Republic Day 2026, Vande Mataram calls upon us not only to remember freedom, but to remain worthy of it.

- MINISTRY OF CULTURE

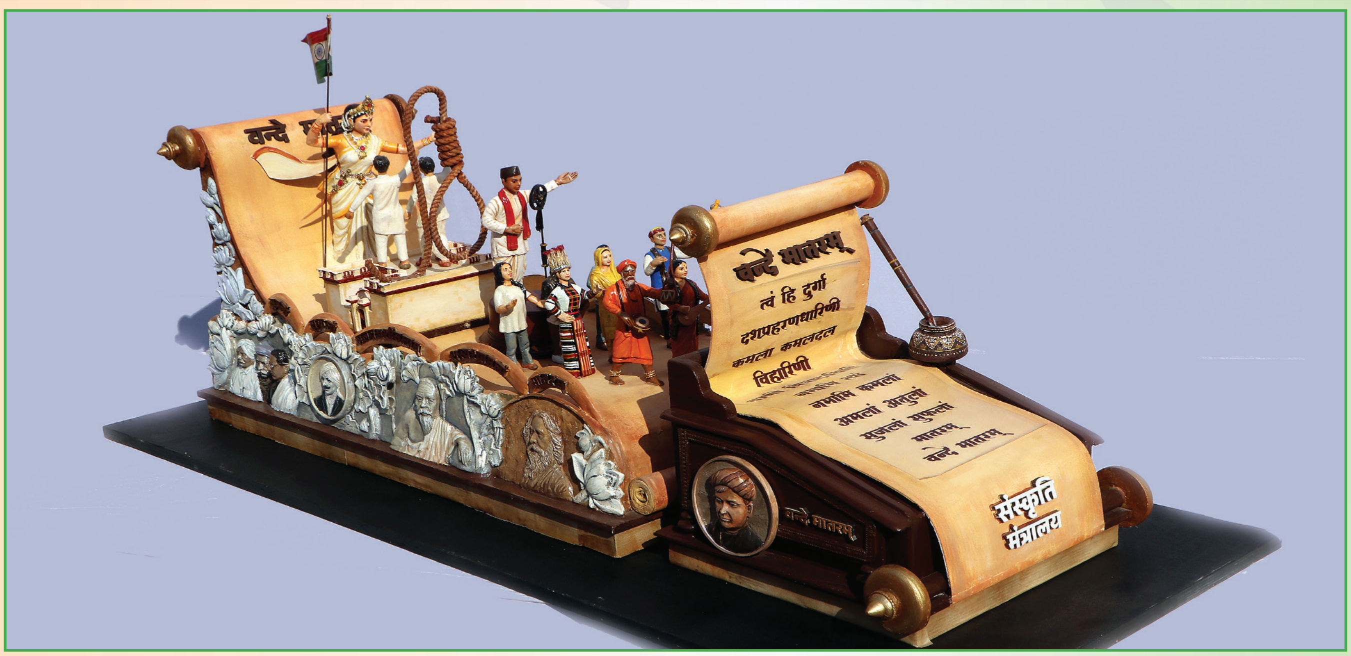

वंदे मातरम् :
भारत की शाश्वत गूंज

ये प्रस्तुति संस्कृति मंत्रालय की ओर से भारत राष्ट्र की आत्मा 'वन्दे मातरम्' को समर्पित है। हमारे राष्ट्रीय गीत की 150वीं वर्षगांठ के भव्य उत्सव में, 2,500 कलाकार अपने नृत्य की लय और भावपूर्ण प्रस्तुति के मनमोहक संगम के माध्यम से वंदे मातरम को जीवंत करने उपस्थित हैं। यह प्रदर्शन श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की अमर रचना को भारतीय पहचान की एक जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में फिर से प्रस्तुत करता है। "सुजलाम सुफलाम" से लेकर इसके सशक्त समापन स्वरों तक, यह प्रस्तुति भावपूर्ण कविता, मंत्रमुग्ध कर देने वाली कोरियोग्राफी और भाव विभोर करने वाले संगीत को एक साथ पिरोती है।

Vande Mataram :
The Eternal Resonance of India

The Ministry of Culture presents a monumental tribute to the soul of a nation. In a grand celebration marking the 150th anniversary of our national song, 2,500 artists come together to bring Vande Mataram to life through a breathtaking fusion of rhythm and spirit. This performance reimagines Shri Bankim Chandra Chattopadhyay's immortal composition as a vibrant manifestation of the Indian identity. From the serene "Sujalam Sufalam" to its powerful concluding notes, the presentation weaves together evocative poetry, mesmerizing choreography, and profound musicality.

PARADE CONTROL CENTRE

PARADE CONTROL CENTRE

रक्षा मंत्रालय
Ministry of Defence
रक्षा (समारोह)
D (Ceremonial)